राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 7 अंक : 90 15 अक्तूबर 2004

सदस्यता शुल्क : भारत, नेपाल व सिक्किम में

वार्षिक : रुपए 40/- एक प्रति: रुपए 5/-

इस अंक में

1.	बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग	2
2.	ध्यानाकर्षण बिन्दू व सूचना	51
3.	अहंकार (महर्षि शिवव्रतलाल जी)	52
4.	लघु कथा	53
5.	अनमोल वचन व ज्ञान-सार	54
6.	सत्संग सार	55
7.	सतगुरु कृपा	58
8.	सेवादारों के लिए विशेष सूचना	60

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइट:- www.radhaswamidinod.org
इ-मेल:- info@radhaswamidinod.org

भिवानी : कैसेट क्रमांक : 99

दिनांक : 10 नवम्बर, 1992

समय : सायं

शब्द-

मत जाइए रे हंस पियासा, सुख सागर में आय के ।
अनहद कूप भरे घट भीतर, पीले स्वांसों सांसा।
जो पीवै सो जुग-जुग जीवै होत न कबहूं बिलासा।
इस रस कारण हुए नप योगी, त्यागे भोग विलासा।।
गुरु दादू, प्रसाद को चुन के पी गया सुन्दर दासा।

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों! जितने सत्संग प्रेमी आए हुए हैं सब से विनती है कि जब तक सत्संग हो शांति से सुनते रहें।

आपको मैंने दिन में भी काफी सत्संग दे दिया था। अब भी महाराज जी की दया हुई और आपकी सेवा में हाजिर हो गया। जो तीन सत्संग दिए इनमें से दो कबीर साहब की वाणी के थे। अब ये दादू जी महाराज की वाणी थी। दादू जी महाराज बहुत बड़े संत हुए हैं। ये बड़े भारी शांतिवाले संत हुए हैं। क्या कहा जाए। संत तो संत ही होते हैं। दादू जी महाराज की एक मिसाल मुझे याद आ गई। संत तो उसी को कहते हैं जो शील मे समा जाए। संतों के विषय में मैंने काफी बातें बताई हैं। अब भी दादू जी की एक बात याद आ गई। पर मैंने पहले जो दोहा कहा था वह

आप लोगों को बता देता हूं। उन्होंने कहा—

चकवी बिछुड़ी रैन की आन मिलै प्रभात।
जो नर बिछुड़े राम से दिवस मिलै ना रात।।

सत्संग के लिए तो एक ही दोहा काफी है। चकवी और चकवा दो जानवर होते हैं। उन दोनों का बहुत प्यार होता है। मैंने ये देखे तो नहीं हैं। सुनी हुई बातें कहता हूं। इनका बड़ा भारी प्यार होता है। पर रात को वे एक टहनी पर नहीं बैठ सकते। वे दोनों न्यारी—न्यारी टहनियों पर ही बैठते हैं। पर उनको इतना प्यार होता है कि वे रात को सोते नहीं है। आपस में बोलते ही रहते हैं। पर रात के बिछुड़े हुए सवेरे सूर्य के उदय होते ही मिल जाते हैं। रात गई और सवेरे ही मिल गए। पर जो इनसान परमात्मा की भक्ति से बिछुड़ गया है, वह कैसे मिलेगा? वह तो अपना सारा ही जीवन बर्बाद चला गया। मैंने एक दोहा कहा था-

जीवन तो थोड़ा भला जो हरि सुमरन होय।
लाख वर्ष का जीवना, लेखे धरै न कोय।।

अर्थात् परमात्मा की भक्ति तो चाहे थोड़ी सी भी जिन्दगी में हो वही अच्छी कही जाती है। लाख वर्ष के जीवन को अगर परमात्मा से विमुख होकर कोई जीता है तो उसे कोई भी याद नहीं करता है। आप लोग पूछोगे कि परमात्मा की भक्ति में क्या आनन्द है? इतना भारी आनन्द इस परमात्मा की भक्ति में है कि यह आनन्द सारे ही आनन्दों की जड़ है। यह कैसे है? पहले मुझे दादू जी की मिसाल याद आई है वही बता देता हूं। दादू जी परम दयाल महात्मा थे। उनको दादू दयाल ही कहा जाता है। उन्हें दादू दयाल इसी लिए बोला जाता है कि वे दयाल ही थे। संत तो दयाल होते हैं। आप कहोगे कि क्या कोई ऐसा प्रमाण है? बहुत सारे प्रमाण हैं। अगर आप सरकार का कोई कसूर कर दो तो सरकार उसको कभी भी माफ नहीं करेगी। उसको सजा जरूर ही

देगी और पूरी सजा देगी। अगर कोई मालिक के कानून को तोड़ देते हो तो उसकी लाइन से बाहर हो जाओगे तथा बड़े जुल्मी हो जाओगे और मालिक भी तुम्हें सजा देगा। वह कभी भी नहीं बख्शेगा। जिसको तुम जर्रे—जर्रे में रमा हुआ कहते हो वह परमात्मा कभी नहीं बख्शेगा। पर संत सतगुरु तो परमात्मा के अधिकार क्षेत्र में किए गए कसूरों को भी माफ कर देता है। आपने शब्द सुना होगा-

संतों की शरणां जाइए म्हारी हेली कोटि कर्म कट जाएं।

वे कोटि जन्मों के कर्मों को काट देते हैं। इसीलिए संतों को दयाल कहा जाता है। दादू जी महाराज को दादू दयाल ही कहा जाता है। मेरे महाराज जी ऐसी मिसाल बताया करते थे। एक बार दादू जी से मिलने के लिये दो पंडित आए। वे बड़े भारी विद्वान थे। उन्होंने कहा—चलो ! दादू जी से शास्त्रार्थ करके आएंगे। इस बात पर और भी बात याद आ गई। क्या करूं? दादू जी महाराज को कई तो जाति के मुसलमान बताते हैं। वे धुनियां थे। यह तो आप लोगों को मैं भी बताता हूं कि उन्होंने सारी जिन्दगी कमा करके खाया। रूई धुनने की तांत से ही उनको ज्ञान हुआ। तांत से जैसे आवाज आती है कि 'तैं ही तैं', 'तैं ही तैं'। इसी आवाज से उनको ज्ञान हुआ कि सब जगह वही है। सब कहते हैं कि वे बड़ी अच्छी करणी वाले थे। वे बातें मैं बाद में बताऊंगा। उनके बारे में बड़ी भारी चर्चा चल पड़ी। अकबर बादशाह ने कहा—मैं भी दादू जी से मिल कर आऊंगा। वे उनसे मिलने के लिए चले। इनका तो कभी से विरोध होता रहा है। यह मैं नहीं कहता हूं। पलटू जी कहते हैं—

सात दीप नौ खण्ड में देखा तत्व निचोय।
संत का बैरी को नहीं हो तो ब्राह्मण होय।।

पर कौन सा ब्राह्मण? ब्राह्मण के दर्शनों से तो पाप कटते हैं

आपको पता है इस बात का। मैं बार–बार यह कहता हूं। जो ब्रह्म को पहचानता है उसे ब्राह्मण कहते हैं और जो जाति का ठेकेदार होता है तथा विद्या का गुलाम होता है उसको तो अपने पेट की ही लगी रहती है और दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करता है। रविदास के साथ में बड़ी भारी नौबतें बीतीं। मौलवी भी महात्माओं संतों को बखशते नहीं है।

यह बस की बात नहीं है। कोई यह न कह दे कि मैं किसी का खंडन करता हूं। ऐसे असंख्य इतिहास मिलते हैं। मैं कौन–कौन सा बताऊं? जब अकबर दादू सा मिलने के लिए चला तो ब्राह्मण और मौलवी लोग इकट्ठे होकर आ गए। उन्होंने अकबर से पूछा कि आप कहां जाते हो? अकबर ने कहा–दादू बहुत अच्छा एक महात्मा है। मैं उनके दर्शन करने के लिए जाता हूं। उनकी बातों को तो इतिहास में लिख दिया है। मेरे पास भी ऐसे आदमी काफी आए और आते रहते हैं।

हमारे गांव का एक पण्डित और लुहारी का एक शास्त्री जो अब भी जिंदा होगा, मिल कर मेरे पास भी आए थे कि चलो उस जाटड़े को हम नीचा दिखा करके आयेंगे। इसी तरह से हजूर महाराज स्वामी जी के पास में भी काशी के चार चौबे मिलकर गए थे शास्त्रार्थ करने के लिए। ये लेख है। पर स्वामी जी महाराज ने कहा कि मैं तो शास्त्रार्थ जानता नहीं हूं। सेवा में काम करने वाली दो लड़कियां–शिब्बो और बुक्की चली जाएंगी। उन लड़कियों ने कहा कि महाराज हम क्या सुनाएंगी? स्वामी जी ने कहा कि सुनाने की जरूरत नहीं है। तुम जाओ और वे चली गई। उन्होंने प्रश्न प्रश्न किये तो उन लड़कियों ने ऐसे उत्तर दिए कि उनको लेने के देने पड़ गए। चौबों ने कहा–ये लड़कियां ही हमारे काबू की नहीं है। स्वामी जी तो पता नहीं क्या जानते होंगे। यह तो संतों की दया और मेहर ही होती है। यहां मेरी भूआ का लड़का मन्साराम

बैठा होगा। वह उर्दू पढ़ा लिखा है। वह बड़ी जिरह लड़ा रहा था। एक मनीराम यहां सत्संगी था। मनीराम का लड़का महाबीर है। मैंने कहा–इस महाबीर से तो शास्त्रार्थ कर ले। उसने महाबीर के आगे हाथ जोड़ लिए। दो ही बातें हुई थी। अब अकबर, दादू जी के पास जाने के लिए तैयार हुवे तो पंडितों और मौलवियों ने उनसे कहा–आप हमारी भी दो बातें उनसे पूछना। अकबर ने कहा–कौन सी बातें पूछनी है? उन्होंने कहा–बस इतना ही पूछ लेना कि आहरण, हथौड़े और संडासी में कौन सा औजार पहले बना?

अब आप बताओ? एक आदमी मेरे पास आया और बोला–क्या मैं एक बात पूछ लूं? मैंने कहा–पूछो। उसने कहा–आप यह बता दो कि पांचों तत्वों का रंग कैसा है? मैंने कहा–अगर मैं इनका रंग बता भी दूंगा तो आप को क्या फायदा होगा? ये तो बताओ। मैं तो आपको फायदे वाली ही बातें बताता हूं। बता तो यह भी दूंगा और अगर याद ही करने है तो 'भक्तिमाला' पुस्तक को देख ले। चरण दास जी की वाणी में देख ले। कबीर साहब की वाणी भी बहुत मिलती है। यह तो कोई भी बात नहीं है। इनका रंग तो अलहदा अलहदा है। सब का पता है। पर जो बात मैं बताता हूं, यदि उसे याद कर लेगा तो तेरा जीवन सफल हो जाएगा। वह बेचारा बोला कि बात तो आपकी ठीक है। सो अगर कोई बाप अनाप–सनाप ही कहे तो किसी का मुंह नहीं पकड़ा जा सकता। मौलवियों ने कहा–बस यह पूछ देना। और कोई भी जरूरत नहीं है। अकबर ने कहा–ठीक है। जब अकबर, दादू जी के पास मिले तो उन्होंने उनको देखा। दादू जी तो दयाल थे। उन्होंने अकबर को बड़े प्यार और शांति से बिठाया। वे बैठ गए। अकबर ने कहा–

दादू से अकबर कहै एक बात अड़ी।
आहरण, हथौड़ी, संडासी में पहले कौन घड़ी।।

दादू जी तो बड़े करणी के धनी संत थे। उन्होंने कहा–

एक शब्द में सब रचा, जो कुछ रचिया सोय।
आगे पीछे वो रचे जो बल हीना होय।।

उन्होंने कहा कि हे अकबर ! आगे पीछे तो वही रचता है जो बलहीन हो। वह परमात्मा तो बल का मालिक है। सारी दुनिया का कर्ता है और वह चाहे सो रच सकता है। उन्होंने तो एक ही शब्द में सब कुछ रच दिया है। अकबर अपनी नीची गर्दन करके आ गया। इसी तरह ही दादू दयाल के पास में वे पंडित गए और जब वे उस नगर में दाखिल हुए, उन्हें गांव के बाहर दादू जी ही मिल गए। वे रूप के सुन्दर नहीं थे। कुरूप थे और नंगे सिर थे। उन पंडितों ने कहा–ये तो कसौण हो गए। गांव में दाखिल होते ही बुरा हुआ कि निकम्मे आदमी के दर्शन हो गए हैं। उन्होंने कहा–क्या करें? फिर बोले–ये सोंण तो ठीक कर लो। उन्होंने दादू जी के सिर पर दो–दो चार–चार जूतियां मार दी। दादू जी कुछ भी नहीं बोले। चुप–चाप घूमने फिरने चले गए। जब उन्होंने जूत मार लिए तो उन्होंने पूछा–दादू जी का मकान कहां पर है? दादू जी ने कहा–सीधे चले जाओ। वहां लोग बैठे हुए मिलेंगे। एक दरवाजा है, वहां मिलेंगे। वे चले गए और वहां जाकर खड़े हो गए। उन्होंने कहा–दादू जी कौन से हैं? लोगों ने कहा–वे तो घूमने के लिए गए हैं। बैठ जाओ। वे आ जाएंगे। अब उनके दिल में हलचल मची। उन्होंने सोचा कि दादू जी वही तो नहीं थे।

ऐ सत्संगियो ! तुम सत्संगी नहीं बनते हो। तुम तो विरोधी बनते हो। उन डेरों में जब बड़े–बड़े सेवादारों को कत्ल कर दिया जाता है क्या वे सत्संगी कहलवाने योग्य हैं? तुम सत्संगी बने बैठे हो और भाई को देखकर जलते हो। सत्संगी को ही सत्संगी देखकर जलता है। क्या तुम सत्संगी हो? सत्संगी का हृदय हरा होता है। सत्संगी को देखकर खुश हो जाए। इतनी खुशी सत्संगी

को देखकर होनी चाहिए कि बड़ी भारी। पर सत्संगी को देखकर सत्संगी जलते हैं। वे तो गहरिथयों से भी गये गुजरे हैं। पर स्वार्थी लोग ही जला करते हैं। जो स्वार्थी नहीं हैं वे नहीं जलते हैं, कभी भी। संत किसी की निंदा बुराई क्यों नहीं करते क्योंकि वे कमा कर खाते हैं और जो लोग चढ़ावा, पूजा और चेलों का धन खाते हैं वे ही दूसरों की बुराई करते हैं। ऐसा न हो कि मेरे चेले उनसे हटकर दूसरी जगह चले जाएं। सो उनको सतगुरु मत कहो। उन्हें तो चेलों के चेले कहा करो। वे तो चेलों के चेले हैं। उन्हें चेलों का भय रहता है कभी चेले चले न जाएं। मैंने तो अब तक कोई चेला नहीं बनाया है। चेला कोई बनेगा तब देखा जाएगा।

सो इतनी ही देर में दादू जी घूम कर आ गए। जब वे आए तो सारी ही संगत उनके चरणों में मत्था टेकने लग गई। वे दो–चार जो पण्डित थे, वे दूर खड़े हो गए। वे घबरा गए। आह! दादू ! संतों के ऐसे विचार होते हैं। धन्य है उनको। अब दादू जी ने उनको कहा–भाई, इतने क्यों घबरा गए। क्या बात है? कोई दो पैसे की हांडी लेता है वह उसे बजा कर लेता है। आप तो कांशी से गुरु धारण करने के लिए आए हो। अच्छा है तुमने पहले जूतियों से पीट, छेत कर तो देख लिया कि नहीं सौदा कच्चा तो नहीं है। आप घबराओ मत।

प्रेमियो ! इनका नाम संत होता है। मैं किसी को एक बात कहता हूं तो सतरह बातें सुनाकर पीछा छोड़ते हैं। आपने स्वामी जी के वक्त की बातें सुनी होंगी। स्वामी जी महाराज के शिष्य हजूर महाराज राय सालिगराम सारे भारत के पोस्ट मास्टर जरनैल थे। उनके बड़े–बड़े सत्संगी थे। आगरा में उस वक्त एक ही कुआं होता था। राय सालिगराम प्रथम श्रेणी के गुरु मुख थे। ऐसा गुरुमुख न कभी हुआ है और न आगे होने की उम्मीद है।

सारी जिन्दगी में गुरुमुखता का ही तो काम है।

गुरु मुख की गति है बड़ी भारी।
गुरु मुख कोटिन जीव उबारी।।

गुरुमुख तो गुरुमुख ही होता है। वे अपने गुरु के लिए पानी लाया करते थे। एक दिन कहते हैं कि जिनका कुंआ था उन्होंने उनका घड़ा तोड़ दिया और उनको दो चार थप्पड़ भी मारे। उन्होंने गालियां भी दी कि हराम जादा! लोगों को तो लड्डू, जलेबी खिलाता है, वह स्वामी बना बैठा है और हमारे कूंवे पर पानी लेने के लिए आता है। वे चुपचाप स्वामी जी के पास में आ गए।

ऐ सत्संगियो! मेरे साथ बीती हुई बातें बताता हूं। मेरा भी गांव के कूंवे पर पानी भरना बंद करवा दिया था दिनोद गांव वालों ने। इन बाबा लोगों ने। उस इतिहास को लिखो तो मेरा और स्वामी जी का इतिहास एक ही है। मैं यह बात भी बता दूंगा। मैं भी बड़ा दुख पाया हूं। स्वामी जी महाराज के पास राय सालिगराम जो इतना बड़ा अफसर था, आया और उसने कहा—महाराज! मेरे साथ तो ये घटना घटी है। स्वामी जी ने कहा—अच्छा ! ऐसा हुआ है तो जाओ माफी मांग कर आओ। अरे ! वही तो पिटते हैं और वही माफी मांगने के लिए जाते हैं। देखो, यह भी कैसी बात है? राय सालिगराम ने कहा—महाराज जी! हम ही पिटे और हम ही माफी मांगे। स्वामी जी ने कहा—हां, तुम ही जाकर माफी मांगों। तुम उसके कुएं पर क्यों गए? जाओ माफी मांगों। उनको रुपये भी दे दिए और उनसे कहा कि उनको ये रुपये भी दे आना और कह देना कि भाई! ये रुपये स्वामी जी ने मिठाई के लिए दिए हैं। आप इनके लड्डू, जलेबी खा लेना। जब वे पोस्ट मास्टर जरनैल हजूर महाराज राय सालिगराम वहां गए। वे इतने बड़े सतगुरु के शिष्य। गुरु के हुक्म से उनके चरणों में मत्था टेक दिया और उनसे माफी मांग ली। उन्होंने कहा—मुझे माफी दे दो। मेरे से गलती हो गई कि मैं तुम्हारे यहां आ गया और तुम्हारा कोई कसूर नहीं है। सब मेरी ही गल्ती थी सो आप माफी दे दो। उन्होंने उनको वे चार रुपये देते हुए कहा—जो ये स्वामी जी महाराज ने दिए हैं। इन की तुम मिठाई खा लेना। दुश्मन दुश्मनी से नहीं वह तो प्यार से ही मरता है। सो उनको रुपए भी दे दिए और माफी मांग कर आ गए। वे दो या तीन आदमी थे। सभी ने इकट्ठे होकर बातें की कि हमने तो जुल्म कर दिए है। चलो स्वामी जी के पास चलकर बातें करते हैं। तब वे स्वामी जी के पास चलकर आए। मत्था टेका और स्वामी जी ने उनसे पूछा कि भाई ! हमारी गलती और भी बाकी रह गई है? उन्होंने कहा—नहीं महाराज! हम तो माफी मांगने आए हैं। आप हमारे कुंए पर पानी भरने आज नहीं आए। अतः हम ही माफी मांगने के लिए ही आए हैं। स्वामी जी ने कहा—हम कुएं पर पानी भरने नहीं जाएंगे क्योंकि हमारा पिछले जन्म का एक कुंआ है उसे हम तैयार करते हैं कल वह तैयार हो जाएगा। वह कुआं आगरा के स्वामी बाग में है और उसको स्वामी सागर कहते हैं। उन्होंने बता दिया कि इस जगह पर कुआं खोद लो। २४ घंटे के अंदर—अंदर कूंवे में पानी आ गया। स्वामी जी ने कहा—सालिगराम! यह अपने पिछले जन्म का कुआं है। इसे संभालो और इसकी मिट्टी की छंटाई कर दो। वहां तो बना बनाया कुआं था। उसकी छंटाई कर ली। वह कुआं अब भी वहां विद्यमान है।

ऐ सत्संगियो ! मैं भी पानी लेने के लिए मंदिर में जाया करता था। मेरे परिवार वालों और रिश्तेदारों ने बाबा जी को बहका दिया कि इसके पास तो चमार और धाणक बैठते हैं। मेरा घड़ा भी फोड़ दिया पानी भी नहीं भरने दिया। मैं आप लोगों को बता दूं कि मैंने नौ दिन रोटी नहीं खाई और मैं अपनी कुटिया में पड़ा रहा। मैं यही सोचता रहा कि मैं क्या करूं? आप लोगों को मैं यकीन के साथ बताता हूं। मेरे गांव का भी कोई होगा। हमारे गांव

में साधु की एक समाधी की पूजा होती है। मुझे वह महात्मा दिखाई दिया। उस महात्मा ने कहा—तुम क्यों घबराते हो? मैं तेरे साथ हूं। उसने यह भी बता दिया कि फलां जगह पर कुआं खोद ले। वहां खारा पानी था पर अब मीठा हो गया है। उसने बताया कि तू अब पानी के लिए वहां कभी भी न जाना। मैं तेरे साथ हूं। मेरा ऐसा घड़ा फोड़ा कि नौ दिन तक मैंने रोटी नहीं खाई। उस महात्मा ने मुझसे कहा—अब तू आराम से रोटी खा और भजन कर। तू रोटी क्यों नहीं खाता है? मैं उस महात्मा की बातें बताता हूं। वह महात्मा कौन था? मुझे तो पता नहीं है। मैं तो यही कहता हूं कि वह मेरा मन ही था। सतगुरु की दया व मेहर से वहां से चुपचाप आ गया और इसके बाद मैंने कभी पानी का घड़ा ही नहीं उठाया। वहां वह कुआं बन गया। इसके बाद एक और कुआं बन गया। इस आश्रम ने तीस के करीब कुएं बना दिए। एक दिन तो वह था कि मेरा कुएं पर पानी ही भरना बंद कर दिया था। यहां गांव वाले भी बैठे होंगे। वे यही कहते थे कि इसके घड़ों को तो चमार और धाणक हाथ लगाते हैं और इसके अंदर ही बैठते हैं। आप सभी लोग क्या समझते हो? मुझे बहुत दुख पाकर यह दौलत मिली है। आप लोग तो बड़े भागी हो, आपको तो ये दौलत मुफ्त में मिल जाती है, मुझे तो बड़ा भारी दुख उठाकर ब्यास और आगरा सभी जगह घूम लिया तब जाकर बड़ी मुश्किल से यह दौलत मिली। मैं इसे छोटी चीज कैसे समझ लूं। मैंने बड़ी पूजाएं की और बाईस—बाईस हजारे माला के फेरे और आरतियां उतारा करता था। उनकी मैं निंदा नहीं करता। यह उनका ही प्रताप था कि मैंने गायत्री का बड़ा जाप किया और भगवान देव आचार्य से बड़ी गायत्री सीखी। प्राणायाम सीखा। पर सतगुरु की दया हुई तो

घर बैठे बनो फकीर, मन मार सुरत को डाटो।

जब सतगुरु राजी होता है तब तो सब कुछ बन जाता है। पर

मैं कह रहा था कि-

चकवी बिछुड़ी रैन की आन मिले प्रभात।
जो नर बिछुड़े राम से दिवस मिलैं ना रात।।

जो आदमी परमात्मा से बिछुड़ जाते हैं वे कभी भी नहीं मिल सकते। उनका वह जीवन वथा ही चला जाता है। बाकी सारी चीजें तो फिर से मिल सकती हैं।

ऐ सत्संगियो! यह जिन्दगी फिर नहीं मिल सकती। ये सांस जो निकल जाते हैं फिर नहीं मिलते। और चीजें तो मिल जाती है। तुम ख्याल करके देखो चाहे कोई भी हो। पर ये जीवन कभी नहीं मिलता। तुम इस टाइम को बर्बाद करते हो। इससे बड़ा पाप और क्या है? तुम विषय विकारों में अपनी जिन्दगी बर्बाद कर देते हो। क्यों? अगर हमारा भी चकवे चकवी की तरह से प्यार हो तो हम कभी भी उस परमात्मा को नहीं भूल सकते। फिर परमात्मा दूर है ही नहीं। वह तो तुम्हारे अंदर ही बैठा है।

ज्यों तिल में तेल है, चकमक में आग।
तेरा प्रीतम तुझमें, जाग सके तो जाग।।

वह परमात्मा तुम्हारे अंदर बैठा हुआ है। महाराज जी कहते थे-

क्यों फिरै भटकता वन में।
तू देख उलट कर मन में।।
तेरे भीतर बसता आप धनी।
तिल के ओहले पहाड़ खड़ा, चादर खूब तनी।

यह मेरे दाता अरमान साहब की वाणी है। यही वाणी कबीर साहब की है। वे कहते हैं-

कटु वचन मत बोल तोहे राम मिलेंगे।
अंतर के पट खोल, तोहे राम मिलेंगे।।

वह राम कब मिलेंगे? जब तुम मिलने की कोशिश करोगे तभी

मिलेंगे। जब तुम्हारा चकवा चकवी की तरह उस परमात्मा के साथ में प्यार हो जाए तब वह परमात्मा हमारा स्वामी है। हमारा मालिक है। हम उससे बिछड़े हुए हैं। जब रूह अपनी जगह से बिछुड़ जाती है तो दुख पाती है। क्या सोचा नहीं कभी आपने?

सीता जैसी सती को भी दुख हुआ जब वह अपने पति से बिछुड़ गई थी। सो जो अपनी जगह को छोड़ देता है वह दुखी हो जाता है। सो तुम जितने भी यहां आए हुए हो तुम्हारी सब की सुरत ने अपनी जगह छोड़ रखी है। वह जगह तो राधास्वामी धाम ही थी। वह जगह तो उस बड़े भारी समुद्र समान थी। जैसे समुद्र से जैसे नाले निकल जाते हैं उसी प्रकार यह सुरत निकल कर आ गई है। वह जगह तो उस सूर्य के समान थी और सुरत किरण के समान होकर निकल आई है। सो वह परमात्मा तो सारी ही दुनिया की जान है। वही हमारी जगह थी, वही हमारा पावर हाऊस था। उसे आप भूल गए हो और कर्मों ने आपको भूल में डाल दिया है। किसने करवाए ये कर्म? हमारे ही मन ने करवाए। ये मन काल महाराज का वजीर है, एजेन्ट है और उसके ही कहे पर चलता है। यह कभी भी अपनी सीमा से आगे नहीं निकलने देता। इसकी हद से तो वही निकल सकता है जो सतगुरु की शरण में पहुंच जाता है और उस चकवा चकवी की तरह से, उस परमात्मा से ही वह प्रेम करता है। सो प्यार के करने वाला बाजी जीत जाता है।

मैंने आप लोगों को बताया कि वे चकवा चकवी दिन के समय तो मिल ही जाते हैं। केवल रात को बिछड़े हुए थे। पर जो परमात्मा से बिछुड़ जाते हैं वे कभी नहीं मिलते। उन्हें अपना जीवन सुधार लेना चाहिए। यह मौका बार–बार नहीं मिलता। तुम्हारी रामायण का ही प्रमाण देकर बताता हूं। उस में लिखा है–

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ शुद् ग्रंथन गावा।।

बड़े भाग से यह मनुष्य चोला मिला है। इतना कीमती चोला शराबों, कबाबों और भैड़े कर्मों में बर्बाद कर देते हो। सारी जिन्दगी बर्बाद करके चले जाते हो। इससे क्या कभी शांति मिली है किसी को? बताओ। हम बड़े–बड़े लीड़र व नेता बन जाते हैं। सारी दुनिया का धन इकट्ठा कर लेते हैं। पर जब वक्त आता है तो हाथ झाड़ कर चले जाते हैं और हम बड़े–बड़े जीवों को अपनी चलती में दुख तो देते हैं सुख नहीं देते। जब हम गुजरते हैं तो हमें दुनिया की वह हाय खा जाती है। बड़े कोढ़ी होकर दुख पाकर मरते हैं। सो उन दुखियों की हाय हर जगह पर दुख देती है। तुम्हें मानव चोला मिला है और तुम किसी को भी दुख देना भूल जाओ। किसी को दुख मत दो। अगर तुम किसी को दुख दोगे तो उस मालिक को पता चलेगा वह तुम्हें दुख दे देगा। सो शांति से जीना सीखो और सिखाओ। संतों का मार्ग तो प्रेम का, करणी का मार्ग है। सो शब्द में यही कहा है कि-

सुख सागर में आय के मत जाइए हंस पियासा।

वह सुख का सागर कौन सा है? मैं रामायण की बातें कह रहा था। वह यही तो है-**बड़े भाग मानुस तन पावा।** यह मनुष्य तन है यही सुख का सागर है। न सुख का सागर पशु शरीर है और न ही हाथी, घोड़े, शेर ऊंट और बकरी आदि हैं सुख का सागर। नहीं है ये तो सभी दुख के सागर है। पथ्वी पर जितनी भी योनियां है सभी तो दुख का सागर हैं। सुख का सागर तो केवल एक इंसान ही हैं जिसे परमात्मा की भक्ति का ज्ञान है। जिन्हें उस परमात्मा की भक्ति का ज्ञान नहीं है वह तो दुख का सागर है। वह तो अपना जीवन ही बर्बाद करके जा रहा है। पलटू जी की वाणी मुझे याद गई है। दादू जी का दोहा है, वे कहते हैं कि-

तप करते जोबन गया, द्रव्य गया दे दान।
प्राण गए सत्संग में तीनों गए मत जान।।

फिर कौन से गए समझोगे?

नारी संग जोबन गया, द्रव्य गया मद्य पान।
प्राण गए कुसंग में, तीनों गए नादान।।

अब बताओ, कौन सुखी है? अब यही तो दादू जी महाराज कहते हैं सुख सागर में आपके हंस पियासा मत जाइए। सुख का सागर तो वही चोला है जिसमें तप करते यौवन चला गया। दान करके धन चला गया। सत्संग करते—करते जीवन समाप्त कर दिया। वही बड़ा भागी है। वही सुख का सागर है। सत्संग की शरण में जाकर बड़े बड़े पापी तिर जाते हैं। मनुष्य का चोला मिल गया। पर कर्म तो पशु के हैं। यह तो कोई भी बात नहीं है। हां मानस का रूप धारण कर इसको तो तीनों तरह से खो दिया। नारी के संग में यौवन खो दिया, धन शराबों—कबाबों में खो दिया। प्राण कुसंग में चले गए। सारा जीवन ही बर्बाद हो गया। वह तो सुख का सागर नहीं हुआ। इन्सान होते हुए भी दुख का सागर बन गया है। उसका जीवन भी व्यर्थ है और वह भूमि पर भार है। आपने सुना होगा कि-

जननी बोझा भारी रे, तूने सांई जी की भक्ति बिसारी रे।

और भी महात्मा कहते हैं-

जननी जनै तो भक्त जनै, या दाता या शूर।
ना तो रहिए बांझड़ी, क्यों वथा खोवै नूर।।

पलटू जी भी बड़ी अच्छी मिसाल देते हैं।

धन जननी, जिन जाया है सुत संत सखी री।

हे माता! तू धन्य है। तूने संत सुत को पैदा किया है।

पलटूदास सो ही सतवन्ती जिन संतन गोद खिलाया है।
धन जननी जाया माया है.....................................।।

वही भागी है और वही सुख सागर में आकर गोते लगा कर जाता है वह सुख का सागर क्या है? सुख का सागर तो वही है जिसने अपने इस मानव शरीर में आकर भक्ति कर ली और खोटे कर्मों से बच गया। खोटे कर्मों से बचने वाला ही सुख के सागर में गोते लगा जाता है। यही भी सबसे बड़ा कर्म—धर्म है। यही सब से बड़ी नीति है अगर कोई इस पर चलता है तो। ना चले तो उसकी मर्जी है। महाराज दादू जी कहते हैं की—

मत जाइए हंस पियासा सुख सागर में आय के।

सो सुख का सागर तो यह मानव शरीर ही माना गया है? आप को पता होगा? तुलसी दास जी बहुत ही सुन्दर मिसाल देकर कहते हैं—

आज का लाहवा लीजिए कल किसको होई।
ये तन मिट्टी में मिल जाएगा, जानत हैं सब कोई।।
लक्खीं किरोड़ी चले गए, बहु जोड़ खजाना।
से तन चंदन लेपते, चले गए शमशाना।।
कुंभकर्ण से वीर थे, रावण लंका धारी।
नाम बिना वंश डूबिया, समझावत है नारी।।

वे कहते हैं कि यह सुख का सागर है। इसे बर्बाद मत करो।

मंदोदरी ने रावण से कहा था कि नाम के बिना वंश डूबता जा रहा है। तू सीता माता को लेकर राम के पास चला जा। पर जिनके खोटे दिन लग जाते हैं वे राम से बैर करते हैं। जिनके बुरे दिन लगते हैं वे संतों से बैर करते हैं। उनसे बैर करके अपना सब कुछ बिगाड़ लेते हैं। जहाज का जब अन्त समय आ जाता है तब वह पहाड़ से टक्कर मारती है। इसी तरह जब इनसान के खोटे दिन लगते हैं, वे संतों से बैर कर लेते हैं। रावण ने राम से बैर किया। सारा जीवन ही बर्बाद कर लिया। अगर ये कहते हो कि उनका उद्धार हुआ। उद्धार तो रावण और विभीषण दोनों का ही हुआ और तो जो संतों की निंदा करते हैं उनका भी बेड़ा पार हो

जाता है। कबीर साहब कहते हैं-

निंदक मेरा मत मरो, जीवो आदि जुगादि।
हम तो ये पद पाइया, निंदक के प्रताप।।

मैंने आप लोगो को निंदकों की बातें बताई थी कि किस तरह से घटनाएं हुईं और उन लोगों ने मेरे साथ क्या किया। आज से ४०–४५ वर्ष पहले की बात है कि १० दिनों तक मेरे विरूद्ध गांव में डंका बजवाया। मेरी उस वक्त छोटी ही उम्र थी। पर मुझे तो एक राधास्वामी नाम का ही सहारा था। मैं तो यही कहता था कि दाता! मुझे तेरा ही सहारा है। मैं तेरी शरण में हूं। तेरे बिना मेरा इस दुनिया में कोई भी नहीं है। सो तुम शरण होना ही नहीं जानते हो। अगर तुम शरणागत हो जाओ तो वह मालिक अपने आप ही तुम्हारा बन जाता है। सो शरणागत होना ही सबसे बड़ी बात है। अगर शरणागत बन गए तो सारा ही दुख दर्द हट जाएगा। पर शरणागत होते ही नहीं है। शरण में ही चले गए तो सब चूक खत्म हो जाती हैं। तो मैं आप लोगों को बता रहा था कि जीवन तो वही अच्छा है जिसमें परमात्मा की भक्ति हो जाए। परमात्मा की भक्ति के बिना तो सारा ही जीवन व्यर्थ चला जाता है। क्योंकि वही भागी है जो इस सुख सागर में यानि मानव चोले में अपना जीवन सफल कर लेता है। मानव चोले में ही भक्ति की जाती है। पशु, देवी–देवताओं की भक्ति नहीं कर सकते हैं। केवल मानव चोले में ही भक्ति की जाती है। हम इस बात को भूल जाते हैं। क्योंकि हमारे अंदर नशा आ जाता है। नशे भी बहुत है। किसी को स्त्री का नशा है तो किसी को जायदाद और रूप का नशा है। किसी को विद्या और राज का नशा है। कितने नशे बताए जाएं? ये नशे बर्बाद कर देते हैं। फिर बड़ी भारी दुर्दशा हो जाती है। सो बचकर ही रहना चाहिए। अपना जीवन सुन्दर बनाना चाहिए। तुम इस सुख–सागर में आए हुवे हो। बड़ा पवित्र टाइम है इसको मत भूलो

और इसे व्यर्था बर्बाद मत करो। आगे कहते हैं-

अनहद कूप भरे घट भीतर, पी ले सांसम सांसा।।

काफी लोग गुरु मंत्र देते हैं। मैं तो इनको कहता हूं कि ऐसा सुमरन पशुओं में भी होता है। वे बताते है कि ओहम्–सोहम् जपा करो। यह ओहम–सोहम का जाप स्वासों का होता है। यह सांस तो पशुओं को भी आता है। जाप करने वाले बुरा न मान जाना।इनको मैं समझाता हूं। पशु भी सांस लेते हैं। जानवर, चिड़िया और चिंटी तक भी सांस लेते हैं। यह ओहम्–सोहम् तो उनका भी चलता रहता है। पर ओहम्–सोहम् को समझना भी बड़ी बात है। यह ओहम्–सोहम् नहीं है। वह दूसरी ही चीज है, और वह भी उरला ही व्यवहार है। 'पीले सांसम सांसा', इस सांसम् सांसा पीने का मतलब यही है कि-

कहता हूं कहे जात हूं, काहे बजाऊं ढ़ोल।
स्वांसा खाली जात है, तीन लोक का मोल।।

परमात्मा के भजन बिना अगर एक सांस भी खाली चला जाता है तो वह तीन लोक का मोल चला जाता है। आठ पहर में २१६०६ (इक्कीस हजार छः सो छः) सांस आते हैं। हम तो सब लुटे ही बैठे हैं। इससे अधिक धन कौन सा बर्बाद करोगे? तुम्हारा यही सबसे बड़ा धन है। इस सांस को व्यर्थ मत जाने दो। यह बड़ा कीमती टाइम है। यही तो सुख का सागर है। सारी दुनिया ही दुख का सागर है। सुख का सागर तो उसी के पाप है जो अपने सतगुरु के बताए नाम की भक्ति करता है। इसके अंदर कुदरती कुएं भरे हैं और उनको खूब संतुष्ट होकर पी ले। इन्हें कैसे पीएगा? जैसे चकवा–चकवी का प्यार होता है। कब पीओगे? जैसे तुम अपने स्थान को भूल गए हो वहां से बिछुड़ गए। यदि अपनी उस जगह से मिलने की तड़प होती है तो उससे मिल जाओगे तो बेड़ा पार हो जाएगा। इतनी तड़प होनी चाहिए। मैं किसकी

मिसाल दूं?

आपने देखा है कि कई–कई लोग चोर होते हैं। वे रात को सोते नहीं है और देवी–देवताओं को मनाते हैं कि कहीं भी उनका डाका लग जाए। जार होते हैं वे भी रात को नहीं सोते कहते हैं कि हे राम! आज तो मौका लगना ही चाहिए। वे दीवारों को फांदते फिरते हैं। अरे! जब परमात्मा उनका भी काम पूरा कर देता है, तो तुम्हारा राम क्या गिरवी रखा है? तुम्हारा राम भी तुम्हारा काम पूरा कर देगा। अगर उस नाम को सांसम सांसा पीओगे तो। अगर तुम उसका सुमरन करोगे तो वह राम तो तुम्हारे पास ही है। वह तो जर्रे–जर्रे में है। वह कहीं दूर तो नहीं जाता है। तुम उसको दूर देखते हो तो वह दूर चला जाता है। उसको दूर मत देखो, नजदीक देखो। वह पास ही है। अगर तुम सांसम् सासा पीओगे तो वह परमात्मा दूर नहीं है। वह तुम्हारे सारे ही काम पूरे कर देगा। पर हम तो उसको दूर ही ढूंढते हैं। आपने देखा है जब द्रोपदी का चीर हरण होने लगा। जब चीर बढ़ा तो उसने कहा–केशव ! तुम बहुत देर से आए। तुमने बहुत देर लगा दी। कष्ण जी ने कहा–तूने मुझे गोकल में याद किया। अगर तू अपने पास ही याद करती तो तुम्हें इतना दुख ही नहीं होता। कोई तेरे केश ही नहीं पकड़ सकता था। जहां तुमने मुझे याद किया था वहीं से मुझे आना पड़ा।

सो उस मालिक को जहां भी याद करोगे उसे वहीं से भागना होगा। मालिक दूर नहीं है, वह तो तुम्हारे ही अंतर में है। हम उसे अंतर में तो तलाश करते नहीं हैं। वह परमात्मा किस तरह से अंतर में है? जैसे काठ में आग है दूध में घी है, तिलों में तेल है। इसी तरह से वह परमात्मा तुम्हारे अंदर बैठा हुआ है। वह दूर नहीं है तुम उसको दूर ही ढूंढते हो। कोई उसको पहाड़ों में ढूंढ़ता है। कोई तीर्थो पर तलाश करता है। कोई मंदिरों में तलाश करता

है। कोई गुरुद्वारों में तलाश करता है तो कोई एकांत में मुनि रहकर तलाश करता है। अपने अंतर में तलाश करते नहीं हो। सारी ही चीजें इसके अंतर में हैं। अपने अंतर में कोई खोजता नहीं है। बाहर ही भटकते रह जाते हो। मेरे बस की बात नहीं है। एक बात याद आ गई। एक बार की बात है। उस वक्त हमारा यह किरोड़ी मंदिर मंदिर बना ही था। सिरसा वाले मस्ताना यहां आए हुए थे। उनकी आंखों में गड़बड़ थी। दिखाने आए थे। वे उधर से निकले। उन्होंने मंदिर को देखकर कहा–वाह रे वाह ! मंदिर के बनाने वाले। बच्चू तू गया तो नर्क में। उन्होंने ये बातें क्यों कहीं? उन्होंने यही कहा कि तेरे जैसा पापी तो कोई भी नहीं है। अंतर की चीजें तो तूने बाहर निकाल दी हैं। ये तो सब चीजें अंतर में ही देखनी थीं। तूने बाहर निकाल दी। तूने लोगों को बाहर मुखी ही बना दिया। ये सुनी हुई बातें कहता हूं। आज याद आ गई तो मुंह से निकल गई। क्योंकि संत तो बेधड़क होते हैं और बेधड़क होकर वे कह देते हैं। उनका और मेरा प्यार बड़ा भारी था। मैं यही बातें कहता हूं कि जो अंतर की चीजों को बाहर निकालता है वह बाहरमुखी ही बन जाता है। सो अंतरमुखी बनोगे तो तुम्हारा जीवन सफल हो जाएगा। अपने जीवन को भी सफल कर लोगे और उस सुख सागर का भी पता लग जाएगा। वह सुख सागर कहां है? आप को पता होगा कि रावण की नाभि में अमत था। तुम्हारे पास भी अमत का खजाना है। संतों ने भी तो कहा है और सभी तो कहते हैं- तुम्हारे मंदिरों में भी कहते हैं कि पांचामत ले लो। तुम्हारे गुरुद्वारों में भी कहते हैं कि अमत छक लो।

एक बार भी अगर कोई अमत छक लेता है तो उसकी मुक्ति हो जाती है। अमत तो अमर बना देता है। वह अमत सभी के अंतर में है। पर वह अमत कब काम करता है? अमत तभी काम करता है जब हमारा व्यवहार पवित्र है। हमारा चलन ठीक होता है, हमारे

विचार ठीक और नेक होते हैं। वे विचार हम में अमत बना देते हैं। आप कहोगे कि कोई प्रमाण तो दो। मैं आपको प्रमाण देकर ही बताऊंगा। उस रावण की नाभि में अमत था। राम की कोई भी ताकत नहीं थी कि उसको मारता। पर उसे तो उसके कुकर्मों ने ही मारा। उसने दस सिर देकर इतने भारी बलिदान द्वारा शिव जी को भी काबू में कर लिया। जब वही कुनीति में लग गया तो उसका सब कुछ ही बर्बाद हो गया। सारे जीवन भर हम अच्छा कार्य करते हैं। पुण्य करते हैं और एक ही खोटा कर्म करके उस सब को बर्बाद कर बैठते हैं। इसी तरह उसने भी कुनीति में लगकर सब कुछ बर्बाद कर दिया। आखिर में उसे मरना ही पड़ा क्योंकि उसका जो अमत का कुंड था वह सूख गया। अमत का कुंड कौन सा था, आपको पता है जैसे ऋषि दयानन्द ने सारे देश को ही जगा दिया था उसका अमत का कुंड भरा था। उसको शीशा मिलाकर मारने लगे तब भी वह जीवित रहा। शीशे ने सारे शरीर को खा लिया पर जहर तो उलटा ही त्याग दिया। सो अमत कुण्ड पूरा होने के कारण मीरा बाई ने भी जहर को अमत बना दिया था। कितने ही महात्मा जहर खा खा कर मर जाते हैं? क्या तुम्हें पता नहीं कि उन्होंने अमत को सिद्ध नहीं किया था? वह परमात्मा तक पहुंचे ही नहीं थे। इसीलिए कई कई मारे जाते हैं। अगर वह अमत कुड से भरे होते तो मरते ही नहीं। कबीर साहब की कौन दशा हुई? फिर भी राजा घबरा गया। सो मैं आपको कितने ही महात्माओं की मिसालें दूं? राजे महाराजे भी मत्था टेक देते हैं और उनकी बंदूके थोथी पड़ जाती हैं। अगर पिछले ही दिनों की बातों को देख लो तो इतिहास लिखने की बात है। हमारे आश्रम से एक गाड़ी को उठा लिया था जिनकी गाड़ी थी वे ही ले गए थे। कोई ये भी कह देगा कि हमारी निन्दा करता है। दूसरे भाई का भरोसा करके ले गए थे। पर उनके पास बंदूक थी, मास्टर के ऊपर

दो—तीन बार वार किये बंदूक चली ही नहीं। क्यों नहीं चली? क्या राम ने उसे बंद कर दिया था? नहीं। उसके भय ने बंद कर दी। वह भयभीत हो गया और हाथ कांप गए, मैं तो यही कहता हूं। पर काफी लोगों ने कहा कि राधास्वामी दयाल ने ही दया की।

इसी प्रकार से अगर तुम पक्का विश्वास करोगे तो मालिक तुम्हारे पास ही मिलेगा। इस तरह की हजारों बातें बन जाती हैं। फिर भी मालिक के आगे विनती करो। वह मालिक तुम्हारी मदद करता रहेगा। मैं तो ये बातें कह रहा था कि जो परमात्मा से बिछुड़ गए वे कभी सुखी नहीं रह सकते। मैं तो यही बातें कहता हूं कि इस सुख सागर में आकर अब भी अगर चूक गए तो चूक ही गए।

अब के चूके नहीं ठिकाना।
दिन पर दिन चोला होय पुराना।।

तुलसी दास जी कहते हैं-

तू करले बंदे भजन हरि का।
फिर क्या बनेगा इस खोड़ मरी का।।

फिर इस शरीर का कुछ भी नहीं बन सकेगा। सो मैंने आप लोगों को बताया कि—

अनहद कूप भरे घट भीतर पीले सांसम सांसा।

सांस—२ को वथा मत खो। कहते हैं कि क्या पता इस सांस का आवण हो न हो।

सांस-सांस में हर भजो, वथा सांस मत खो।
पता नहीं इस सांस का, आवण हो न हो।।

सांस का कोई भी भरोसा नहीं है। इसीलिए। मैं एक दिन जा रहा था और हमारा एक ताऊ है, वह यहीं बैठा होगा उसका नाम रामकुमार है वह साथ था। कोई बात चल पड़ी एक आदमी ने कहा—ताऊ! पता नहीं है वक्त का कुछ भी। रामकुमार ने कहा—क्यों?

उसने कहा–एक पांव आदमी आगे रखता है तो दूसरे की भी आस नहीं होती है। बताओ ऐसे आदमियों का कोई क्या करे? वह ताऊ जो यहीं बैठा है, उसने कहा–भाई ! दोनों पांव एक ही साथ रख दे तो फिर? बताओ उसका कोई क्या करे? उसने तो यही कहा कि वाह भई वाह! एक–एक करके क्यों रखे? दोनों एक साथ आगे रख दे। फिर क्या होगा? सो दोनों पांव एक साथ रख दोगे तो बाजी भी जीत जाओगे। दोनों पांव का सीधा मतलब जगत और अगत से है। ये दोनों चीजें कब बनेंगी?

भक्ति करे तो कुल नहीं और कुल बिन भक्ति नहीं होय।

आगे कहते हैं-

भक्ति करो कुल में रहो, अड़े रहो दरबार।
दो घोड़ों पर वही चढ़े जो हो चारों पां हो असवार।।

चारों पांव असवार तो वही है जो इधर का भी पूरा है और उधर का भी पूरा है। जो अपने दोनों काम पूरे करता है। संतों ने तो अपने दोनों ही काम किए हैं। वे अपना जीवन सफल कर गए। अपना काम करके चले गए। वे सांस–सांस में अपने घट के अनहद कूप को जो भरे पूरे थे उन्हें पीते रहे। आगे कहते हैं कि-

जो पीवै जुग-जुग जीवै होत न कबहु विनासा।

जुग–जुग जीने का मतलब क्या है? मीराबाई का नाम ऐसे लेते हैं, जैसे कल ही हुई हो। रविदास भी जैसे कल हुआ है। उसके परिवार वालों का कोई नाम लेता है? सो दादू, पलटू, रैदास कितने ही संत हुए उनके परिवार में तो और भी हुए होंगे। उनकी पीढ़ियां चलती आ रही हैं। उन औरों का तो कोई नाम नहीं लेता। आज भी उनके परिवार के कोई न कोई होंगे। पर उनके नाम तो ऐसे लिये जाते हैं जैसे कल ही पैदा हुए हों। जुगों–जुगों तक वे जीवित रहेंगे। **मूर्ति चली जाती है, कीर्ति रह जाती है।** उस अमत को जो पी लेता है वह युगों–युगों तक जिन्दा रहता है। अमत तो

अमर करने के लिए ही होता है। इसीलिए मैंने बताया था कि पंजाब में सिक्ख भी अमत छकते हैं। वे पानी में पतासे घोल कर अमत बना लेते हैं। तलवार लेकर खड़े हो जाते हैं और वाणी पढ़ते हैं। पर असल वाणी को तो वे भूल ही गए हैं। वे आनन्द साहब जप जी साहब, सुखमनी साहब और भी दो चार शब्दों को पढ़ते हैं। वे पांच वाणी पढ़ते हैं और कहते हैं कि अमत छक लिया। अमर हो गए। वे पांच बाणियां तो अंतर की पांच धुनियां थीं। लोगों ने उन पांचों धुनियों का सुमरन बना लिया। उन पांच धुनियों में तो कोई जाता नहीं है। नानक साहब ने तो यह नहीं कहा कि इनका सुमरन करो। नानक साहब तो कहते हैं कि-

घर में घर दिखलाय के सो सतगुरु पुरुख सुजान।
पांच शब्द धुनकार, धुन तह बाजैं शब्द निशान।।

उन्होंने ये तो नहीं कहा कि तुम सुमरन न करो या तुम उनका जाप करो वे कहते हैं कि–पांच धुनियां अंतर में धुनकारें देती रहती हैं। शब्द उनके निशान हैं। उनको सुनते हुए आगे चलो। इसे अमत छकना कहते हैं। इन पांचों धुनियों का नाम ही अमत है। हिन्दुओं ने पांच चीजें मिला कर उनका पंचामत बना लिया। पांच वाणी पढ़कर कह दिया कि अमत छक लिया। अमत छक लेते तो मरते ही नहीं। मरना थोड़ा ही है। वे तो खोटे कर्म करते हैं। अमत तो वही छकते हैं जिसको सतगुरु ने सतलोक का भेद बता दिया गया है और नाम बता दिया है। अगर वे साधन व अभ्यास करके सतखण्ड में पहुंच गए तो अमर हो गए। ये सतगुरुओं का मार्ग है इसको हम सभी भूलते जा रहे हैं। आप ये भी कह दो कि क्या आप ही बताने के लिए आए हो? मैं तो नहीं आया पर संत तो सभी बताने के लिए आए हैं। वे बता कर चले गए। उनसे क्या फायदा उठाया? जो आप लोगों को सच्ची बातें बताने के लिए आए उन्होंने तो अपनी खाल ही खिंचवाई। जो आप लोगों को सच्चा उपदेश

देने के लिए आए उन्होंने अपनी बेइज्जती ही करवाई। सतगुरु ने तुलसीदास से चक्की पिसवाई। रविदास के हाथ कटवा दिए कि देखें जूती को कैसे बनाएगा। दादू जी महाराज की बड़ी भारी बेइज्जती की। बाबर बादशाह ने नानक साहब को जेल में डाल दिया। कहते हैं कि संत करामात तो नहीं दिखाते हैं। फिर भी उन्हें कुछ तो करना ही पड़ा। जब बाबर बादशाह ने नानक साहब को जेल में डाला तो नानक साहब ने कहा–बाबर, तू बादशाह है और मैं भी बादशाह हूं। आपको मेरे बराबर काम करना पड़ेगा। बाबर ने पूछा–क्या काम करवाओगे? नानक साहब ने कहा-ये और चक्की पीसते हैं तो तूं भी चक्की पीस। मैं भी चक्की पीसूंगा। ये कोई बात नहीं है। पर एक काम आपको भी करना होगा या तो इनमें अनाज डाल दे या चक्की घुमा दे। बाबर ने कहा–अनाज तो मैं डाल दूंगा। आप चक्की घुमाओ। नानक साहब ने कहा–अभी लो। नानक साहब के पास डंडा था। उन्होंने कहा–अरे डंडे! कुछ तो काम कर के दिखा दे। गुरु की इजाजत से तुलाधर ने तराजू का काम किया। अब बाबर को लेने के देने पड़ गए। लोग कहते हैं कि नई दिल्ली ही उस वक्त बनी थी। कई लोग दूसरी तरह कहते हैं कि यह तुलाधर की बनाई हुई है। उस वक्त पुराना शहर बह गया था। आपने मेरे से ही यह मिसाल भी सुनी होगी। सो नानक साहब ने भी कहा–अरे डंडे ! कुछ काम तो कर दे। उन्होंने डंडा खटखटा दिया और जो वहां जो हजारों चक्कियां थी सभी चल पड़ीं। महाराज नानक साहब ने कहा–अरे काफिर! अरे कमीना! इन में अनाज डाल। तुझे कोई मिला ही नहीं था। तुझे पता नहीं है। अब बाबर बादशाह ने उनके पांव पकड़ लिए। उसने कहा–मैंने इसीलिए आपको पकड़ा था कि इसी बहाने से संतों के दर्शन हो जाएंगे और हमारे भी कर्म कट जाएंगे। मैं तो आपकी शरण में आया हूं। समझदार आदमी बात को ठीक कर लेते हैं।

बातें ठीक बनाकर अपना जीवन सफल कर लिया। सो संत जीवों का भला करने के लिए तो आते हैं और वे सच्ची बातें ही कहते हैं। हम ही उन्हें नकली समझ लेते हैं। उनका अमत सतलोक में पहुंच कर ही छका जाता है। सतलोक तक वे पांच वाणियां बताई जाती हैं। यही अमत हिन्दुओं का था। सभी का अमत तो एक ही होता है दो नहीं हैं। इन्होंने तो न्यारे–न्यारे मजहब बना कर उनके न्यारे–न्यारे उनके ठेकेदार बन गए और असली बात को भूल ही गए। इसी लिए वे खाली रह गए। मतलब यह है कि वे इस सुखसागर में आकर भी प्यासे ही रह गये और अपने जीवन बर्बाद कर लिये आगे कहते हैं-

इस रस कारण हुए नप योगी, त्यागे भोग विलासा।

राजा लोग इस रस के कारण अपना राज छोड़ कर योगी हो गए। आपने एक महात्मा की वाणी सुनी होगी-

लागी का मार्ग और है लगी चोट कलेजे करके।
बन बीच भतहरि भूप ने मारा था ताक निशाना।
कर्मों करके हो गया, एक साधु जी का आना।।
मुआ मग जिवाय दो जी, ना तार धरो यह बाणा।
जिन कर दिया जीवतड़ा ढ़ोर है,
वह शिष्य बना परीक्षा करके।

अब भरथरी राजा भी अपना राज पाट छोड़ कर साधु बन गया था। इसीलिए कहते हैं कि–

इस रस कारण हुवे नप योगी।

वे साधु बन गए। दूसरे एक और भी कहते हैं–

लागी का मार्ग और है लगी चोट कलेजे करके।
शेख फरीदा कुएं विच लटका, जिन बोली मीठी भाषा।
कागा चुन-चुन खा लिए, मेरे हांडा पर का मांसा।।
दो नेत्र मतना फोड़िए, मनै हरी दरश की आशा।

जिन करी तपस्या घोर है, वह हुआ आसरे हर के।।

अब आपने यह भी सुना है कि शेख फरीदा कुंए में लटक गया था रस्सी बांध करके। अब उसके पांव पर कौवे चोंच मारने लगे। आपने सुनी हैं बातें कि बड़े–बड़े राजा–महाराजा भी योगी बन गए। कौवे चांच मारने लगे तो शेख फरीदा ने कहा–मेरे सारे शरीर को खा लेना पर मेरे दोनों नेत्र न फोड़ना। क्योंकि मुझे ये ख्याल है कि परमात्मा मुझे आकर संभालेगा। मैं उसके दर्शन कर लूंगा। सो–

जिन करी तपस्या घोर है वह हुआ आसरे हर के।

सो बड़े–बड़े राजा, महाराजा, राज छोड़–छोड़ कर और तपस्या करके अपने जीवन सफल कर गए। वे नप योगी बने। उन्होंने सारे भोग–विलास छोड़ दिए। संत भी यही वाणी कहते हैं। बार–बार तुमने रामायण तो सुनी है।

काम, क्रोध, मद लोभ की जब लग घट में खान।
तुलसी पंडित और मूर्खा दोनों एक समान।।

यही कबीर साहब कहते हैं-

कामी, क्रोधी, लालची गुरु इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करे कोए सूरमा, जात वर्ण कुल खोय।।

कामी, क्रोधी, लालची से भक्ति नहीं हो सकती है क्योंकि कबीर साहब फिर कहते हैं-

कामी तिरैं, क्रोधी तिरैं पापी तिरैं अनन्त।
आन उपासक, कतध्न तिरैं न नाम रटंत।।

फिर कहते हैं-

कामी तिरैं, क्रोधी तिरैं पापी तिरैं अनंत।
लोभी जिवड़ा ना तिरैं, कहैं कबीर सिद्धंत।।

लोभी आदमी, कोई तिरा हो याद नहीं आता। सो मैं आपको बता रहा था कि बड़े–बड़े राजा, महाराजा, योगी बन गए। और भी

कहते हैं-

लागी का मार्ग और है लगी चोट कलेजे करके।
बाजिंदा कहै ऊंट को ठाओ, लोग कहैं यो मूआ।
उठण वाली चीज ना, लिकड़ गया सैलानी सूआ।।
कोई नख सिख बिगड़ी नांह बाजिंदै अचरज हुआ।
जिन माना अचरज जोर है, तजा राज काल से डर के।।
बाजिंदा पूत पठान का देन्दा दो दल मोड़।
बात सुनी गुरुदेव की तो तरकस दिन्हां तोड़।।

कहते हैं–बाजिन्दा घूमने के लिए गया हुआ था। आगे रास्ते में ऊंट मरा पड़ा था। उसने कहा–इसको उठाओ भाई! रास्ता साफ करो। लोगों ने कहा–महाराज! इसमें उठने वाली चीज थी वह तो निकल चुकी। इतनी ही देर में बाजिंदा का गुरु पहुंच गया। राजे–महाराजाओं के गुरु होते थे। जिन राजे– महाराजाओं के गुरु नहीं होते वे गिर जाते हैं। वे रास्ता भूल जाते हैं। सो सभी राजे महाराजे पहले जमाने में तो गुरु का शरणा लिया करते थे और सतगुरु उनको सतमार्ग समझाते रहते थे। उनका सहारा रहता था। वे डिगते नहीं थे। गुरु वे डिगते हुओं को खड़ा कर लेते थे। सतगुरु की शरण इसीलिए ही तो ली जाती है। आजकल जो गुरुओं की शरण नहीं जाते हैं वे गिरते ही चले जाते हैं। वे तो लगे ही रहते हैं। जैसे-

तष्णा ना भरती, बड़ी लंबी चौड़ी है।

जिनको सतगुरु की शरण नहीं है उनके साथ ये बातें बनती हैं।

तष्णा ना भरती बड़ी, लंबी चौड़ी है।
नित नया चाव है, आगे-आगे दौड़ी है।।
किया नहीं संतोष, नहीं सुरता मोड़ी है।
समझ विचार भाई जिन्दगी थोड़ी है।।

छोड़के विभूति सारी खाली जावैगा।
अन्त समय में राम नाम कैसे गावैगा।।

अब बाजिंदा ने कहा–इसे उठाओ। लोगों ने कह दिया कि–महाराज ! इसमें उठने वाली चीज ही नही है। उसने पूछा–क्या हुआ। लोगों ने बताया कि वह चीज तो इसमें से निकल गई है। बाजिंदा ने कहा–इसकी तो सारी ही चीजें ज्यों की त्यों हैं। इसके नख शिख तो बिगड़े नहीं हैं। लोगों ने कहा–वह चीज नहीं रही है। वाजिन्दा ने कहा–क्या यह चीज सभी में से ही निकल जाती है? लोगों ने कहा–काल तो सभी को खाएगा। सो उसने काल के भय से राज को भी तज दिया। उसने पूछा–क्या मेरे साथ भी ऐसी ही दशा हो जाएगी? लोगों ने कहा कि तेरे साथ तो इस ऊंट से भी बुरी हालत होगी। वाजिन्द ने पूछा–वह क्यों? लोगों ने बताया कि वह बुरी दशा तो इसीलिए होगी कि तुम्हें दफन किया जाएगा। तब इस शरीर में कीड़े पड़ेंगे और वे कीड़े भी वहीं कब्र में मरेंगे। तेरी दशा तो इससे भी खराब होगी। तब उसने अपना राज ही छोड़ दिया। इसी कारण बहुत से राजे–महाराजे सारे भोग–विलास त्याग कर चल दिए। तुम घरों में रहते हो और सत्संगी बने बैठे हो। तुम भोग–विलासों के कीड़े बने बैठे हो तो फिर तुम उस अमत को कैसे पीओगे? तुम किस तरह जीवोगे? इस सुख सागर में आकर भी प्यासे ही रह जाओगे। क्योंकि प्यास तो उस धुनी से और राम के नाम से ही बुझती है। उसकी बजाये तुमने तो दूसरी ही प्यास बुझानी शुरू कर दी। यदि अग्नी में इंधन डालते हैं तो अग्नि कभी भी नहीं बुझती है। अग्नी में इंधन डालना बंद कर दोगे तो बुझ जाएगी। इसी तरह हमारे विषय–विकारों की आग भड़क जाती है। इसे ज्यादा जगाते रहोगे तो ज्यादा भड़क जाओगे। अगर इसे सुमरन से ठंडा कर लोगे तो शांति मिल जाएगी। तिर जाओगे। यही सब से बड़ा रत्न है। इसे बर्बाद नहीं

करना चाहिए। इस रस के कारण बड़े–बड़े राजे–महाराजे योगी बन गए। उनके राज में क्या था? स्वामी जी कहते हैं कि जब शब्द की धुनी का रस मिल जाता है तो सात बादशाही को भी ठुकरा देते हैं। उस ठुकराने का क्या मतलब है। उन कबीर, दादू, पलटू ने क्या ठुकराया? उन्होंने संसार से अपनी वत्ति हटा कर दूसरी तरफ जोड़ ली। कहां जोड़ा है? इस मन की दो रानियां हैं–एक का नाम प्रवत्ति है और दूसरी का नाम निवत्ति है। सारी दुनिया ही प्रवत्ति में मारी–मारी फिरती है। पर निवत्ति मार्ग पर कोई भागी ही चलता है। जब निवत्ति मार्ग पर आ जाता है तो शांति मिल जाती है। सारा जीवन सफल हो जाता है। वही भागी अमत पीकर जाता है और वही सुख सागर में प्यासा नहीं जाता। यह बड़ा कीमती टाइम मिला है। आगे कहते हैं-

गुरु दादू प्रसाद को चुन के पी गए सुंदर दासा।

अब। यह दादू जी महाराज की वाणी है और सुन्दर दास उनके चेले थे उनके काफी चेले थे। मैंने आपको बताया था कि रज्जव नाम का भी उनका एक चेला था। वह रज्जव उनकी सेवा में रहा करता था। सुंदर दास तो दूसरे जन्म में भी उनका शिष्य बनकर आया था। पहले जन्म में उसका नाम बग्गा साहब या कुछ ऐसा ही नाम था। दादू प्रसाद को चुन के लेने का मतलब भी यही है कि वह पहले जन्म में दादू जी का बड़ा भारी गुरुमुख था। कहते हैं, पहले महात्मा सूत मांगा करते थे और वे खड्डी का कपड़ा पहना करते थे। उस सूत से वह कपड़ा अपने आप ही बुन लिया करते थे। एक दिन वह सूत मांगने के लिए चला गया। उसने वहां जाकर ये कह दिया कि सेर सूत दे और एक पूत ले। किसी भागवान के यहां औलाद नहीं थी। उसने दो सेर सूत दे दिया। वह सूत लेकर आया। दादू जी ने उसको देखा और बोला–भाई! मैं तो नहीं जाऊंगा। उसके तो सात जन्म में भी औलाद नहीं लिखी है। तू

चले जाना। मेरे नाम का एक सेर सूत वापिस देकर आ। तुझे तो जाना ही पड़ेगा। क्योंकि तू तो लाया है। जब उसने दादू जी के पांव पकड़ लिए कि महाराज! आज गलती हो गई और मुझे बख्श दो। दादू जी ने कहा—तू डर मत। तू जब बारह वर्ष का हो जाएगा तब मैं तुझे बुला लूंगा। यह वचन तो तुझे पूरा करना पड़ेगा। तब वह दूसरे जन्म में रज्जव बन कर आए, और जब वे बारह साल के हो गए तो दादू जी उस प्रसाद को चुन कर ले गए। ये प्रसाद था। सो रज्जब भी उनके बड़े भारी शिष्य थे। वे भी उनकी सेवा किया करते थे। यह बात मैंने आप लोगों को कई बार बताई है। कहते हैं—एक दिन रज्जब घोड़ी पर चढ़ा हुआ सेहरा बांधे जा रहा था। आगे उसको दादू जी मिल गए। सो ज्ञान का और घाम का तो चमका ही लगता है। आगे से वह आया तो दादू जी ने देखा—यह कौन है भाई? सत्संगियों ने बताया कि यह तो आपका निजी चेला है रज्जब। दादू जी पास से निकले और उन्होंने कहा—वाह!

रज्जब तूने गज्जब कीन्हा, बांधा मस्तक मोड़।
आशा थी हरि मिलन की, करी नर्क में ठोर।।

रज्जब ने कहा—महाराज ! मैंने तो यह 'नामना' की खातिर किया है। हमारा वंश डूब रहा था। घर वालों ने कह दिया कि नामना चल जाएगी। दादू जी बोले—

नामना चाले नाम से, सुत दारा से नांह।

उन्होंने कहा—ऐ भाई ! नामना तो नाम से ही चलती है। स्त्री—पुत्र से नहीं। उन महात्माओं की उस मीरां की तो कोई औलाद नहीं थी। उसकी नामना चल रही है। स्वामी जी महाराज की तो कोई भी औलाद नहीं थी। सारी दुनिया में उनके नाम का डंका बज रहा है। राम कष्ण परमहंस, कोई भी औलाद नहीं थी। सारी दुनिया में उनकी फोटों लगे हुवे है। उनकी नामना चल पड़ी

है। सो नामना तो नाम से ही चलती है। स्त्री—पुत्र से नामना नहीं चलती है।

यह बात जब कही कि नामना सुत दारा से चालै नांहि। रज्जब ने मोड़ को तोड़ कर फेंक दिया और मस्त होकर चल पड़े। वे जंगल घूमते जा रहे थे आगे ज्वार—बाजरे की तगड़ी फसल खड़ी थी। सामने से एक भांड आ रहा था। उसके पीछे भांडणी थी। उसके सिर पर टोकरी थी उसमें उनके दो बच्चे सो रहे थे। भांड की मूंछों पर टपके पड़ रहे थे। उसने सोचा कि गर्मी का महीना है और इस कारण पसीना आया हुआ है उसकी बूंदें हैं। रज्जब ने कहा—भाई ! तू तो बहुत दुखी है। तुझे पसीना आया हुआ है और तेरे सिर पर बोझ भी है। भांड ने कहा—भाई! दो जोड़ले लड़के हैं। वे सो रहे हैं उन्होंने पेशाब कर दिया है और मेरे मुंह के ऊपर ये पेशाब की धार ही बह रही है। तब रज्जब ने कहा—

भली हुई सतगुरु मिला, ना तो होता भांड।
सिर पर धरता छाबड़ा और पीछे होती रांड।।

अच्छा हुआ कि सतगुरु मिल गया, नहीं तो मेरी भी यही दशा होती जैसी इस भांड की हो रही है। सो-

जिनको सतगुरु मिलिया, उनका लेखा निमड़िया।

जिनको सतगुरु मिल जाते हैं उनका लेखा निमड़ जाता है। क्योंकि वे निज घर का रास्ता बता देते हैं। सो काल का कर्ज चूक जाता है। सो इस रस के कारण बड़े—बड़े राजा भी महात्मा योगी बन गए। घर और भोग विलास इस रस के कारण ही छोड़ गए। ये शब्द का रस ही सब से ऊंचा रस है। आपने सुना है-

शब्द ही मारे मर गये, शब्द ही तजिया राज।
जिन ये शब्द पिछाणियां, सरे उन्हीं के काज।।

सत्संग तो एक ही दोहे का था। कौन सा?

चकवी बिछुड़ी रैन की, आन मिले प्रभात।
जो नर बिछुड़े राम से, दिवस मिलै ना रात।।

अपनी छाती पर हाथ धर के देखो। जब हमारी चारों अवस्थाएं चली जाती हैं तो हमारा जीवन ही बर्बाद हो जाता है। क्योंकि बालपन तो खेल–कूद में खो दिया। फिर जवानी में गया फिर बुढ़ापा आया और बुरी तरह बूढ़े हो गए। सारा जीवन हम बर्बाद कर देते हैं। बिना परमात्मा की भक्ति के सभी जगह से चला जाता है। कई बार मैं कहा करता हूं-

दोनों दीन से गये पांडे। हलवा मिला न मांडे।।
आए थे किस काम को कर बैठे के बात।
के मुख ले मिलिए राम से खाली दोनों हाथ।।

परमात्मा से मिलने के लिए दोनों हाथ खाली होते हैं। जगत भी खो दी और आगत भी खो दी। दोनो दीन से चला जाता है। सो वही भागी है जो परमात्मा की भक्ति करता है। जो अपने जीवन को पवित्र करके चलता है। पर भक्ति तो मर्यादा पर चलने वाला ही कर सकता है। जो साधु मर्यादा से हट जाता है, वह गिर जाता है। जो गहस्थी अपनी मर्यादा को छोड़ देता है वह भी गिर जाता है। जो औरत अपनी मर्यादा को त्याग देती है वह गिर जाती है। समुद्र की भी मर्यादा टूट जाती है तो प्रलय हो जाती है। सो यह मन भी एक बड़ा भारी समुद्र है और इसको मर्यादा में बांध कर रखोगे तो रह जाएगा। नहीं तो यह बड़ा भारी नुकसान कर देता है। नानक साहब पूर्ण पुरूष थे। वे कहते हैं कि–

नानक मन जीता, तो जुग जीता।।

जिसने अपने मन को काबू में कर लिया तो सारा ही संसार उसकी मुट्ठी में आ जाता है। सो मन तभी काबू में आ सकता है जब तुम्हारी रहणी पवित्र होगी। तुम्हारे विचार पवित्र होने चाहिए। विचारों में ही शक्ति है। इनमें इतनी भारी शक्ति है कि उसका

वर्णन नहीं हो सकता। विचारों के कारण ही सब कुछ बन जाता है। अपने विचार पवित्र और ऊंचे रखा करो। मैं तो थोड़ी देर दर्शन करने के लिए आया था। सो आपके दर्शन भी कर लिये और मैंने भी दर्शन दे दिए। आज का सत्संग रूहानी नहीं था। बाहर मुखियों के लिए था। ऐसा ही एक शब्द सुनाऊंगा। अपने ऊपर घटाओगे तो जी जाओगे। भागी तो वही होता है जो बात को अपने ऊपर घटा लेता है। मैं तो कभी भी महात्माओं के सत्संग में गया, वहां जो कथा वार्ता आई अपने ऊपर घटा लिया करता था। हे मालिक! दया करना। मेरे में तो ऐब भरे पड़े हैं। बचा देना इनसे। अपने ऐबों से बचने के लिए तौबा बोलनी पड़ती है। वे आप ही दूर हो जाते हैं। पाप तो वही दुख देता है जब आदमी पाप करके खुश होता है। पाप करके तौबा अगर कर लेता है तो वह पाप बिखर जाता है। सो तौबा बोलना चाहिए। कभी आप यह समझते हो कि हम मालिक बने बैठे हैं। हमारे पास बड़े धन और जायदाद हैं। रात और दिन खोटे घड़ते रहते हो। ये हमारे कुछ काम नहीं आएंगे। इस शब्द में इसकी सारी व्याख्या कर दूंगा। इसको सुनते ही पता लग जाएगा। जैसा सत्संग था, वैसा ही शब्द सुना दूंगा।

मेरी-मेरी कह गए, अर्जुन योधा भीम।
धरी धराई रह गई, गढ़ कोटां की नींव।।

करै नर के मेरा मेरा....करै नर के मेरा मेरा।
बिना भजन भगवान जगत में, कोए नहीं सै तेरा।।
मीत हैं मतलब के सारे, जिन्हों को समझै तू प्यारे।
मातपिता सुत वंधु और भाई,प्रीत जिन्हों से तू लाई।।
झूठी ममता समझ ले, कर नर सोच विचार।
फंस गया विषय विकार में, तूने ये के करली कार,

काल फिर दे लेगा घेरा।। १।।
कपट से माया उपजाई,
पाप की गठड़ी सिर ठाई।
माल को सब रल मिलके खावैं,
काम तेरे कोई नहीं आवैं।।
सुख दे रहा परिवार नै, दुख भोगैगा आप।
पड़ै नर जम गोद में भोगेगा संताप।।
पकड़ कुंभी में गेरा करै नर के मेरा....।। २।।
अंत चेतन तज जावै, पलक घड़ी रहण नहीं पावे।
तने देख देख डरते, सब काढ़ो-काढ़ो करते।।
ले जां जंगल बीच में ला देवैंगे आग।
महल गुमट और हेलियां सब ही जागा त्याग।।
अंत शमसानों में डेरा....।। ३।।
अब सोच समझ प्राणी,
चंद दिन थोड़े की जिन्दगानी।
जो चाहवे भव सागर से तिरना,
ले ले सतगुरुओं का सरणा।।
सोहन लाल संसार में, भजन चीज है सार।
भजन उभारैं गात को, जा छोड़ै परले पार,
सत्य वचन ये मुख टेरा.....।। ४।।

कई लोग कह देते हैं कि सतसंग क्या करता है? पता नहीं? सत्संग विन होती है साफ ख्वारी। बिना सत्संग के तो ख्वारी होती है।

बैठ कुसंग में हानि ठावे, तन मन बने विकारी।
पाप धर्म को समझे कोनी बन जा चोर ज्वारी।।
कुसंग में बैठ कर तो हानि ही उठाता है इंसान।

कुसंग में बैठ कर वह चोर ज्वारी बन जाता है। आगे कहते हैं-

मात पिता की सेवा छोड़ै, ईष्ट देवता नारी।
घर धरती को गिरवीं रख दे, बन जाता व्यभिचारी।।

इस तरह से। वह क्यों बन जाता है? वह कुसंग में बैठ कर धर्म को भूल जाता है। तुम अपने शास्त्रों को तो भूले बैठे हो। रामायण में भी तो आता है-

दुष्ट संग न दिए विधाता।
ता ते भलकर नर्कहिं बासा।।
संत देख के माथा ठनके बात जगत की प्यारी।
आया था कुछ हल्की करने, कर चाला भारी।।

संतों को देखकर तो माथा ठनकता है और शराबी–कबाबियों को देखकर बोतल खोल देता है। कहता है कि आओ पीओ। क्योंकि घर का नाश करवाना है। सब तो बर्बाद होते जा रहे हैं। उस सुख सागर को भूलते जा रहे हैं। बाहर निकल गए हैं। सारा जीवन ही बर्बाद कर देते हैं। सत्संग की महिमा बड़ी भारी है, सत्संग तो सत्संग ही होता है। सत्संग वैतरणी नदी है। सत्संग तो सभी पापों का नाश कर देता है। कल भी मैंने जिक्र किया था कि सत्संग सब चीजों से पहले आता है। सत्संग में आकर बड़े–बड़े पापी तिर गए। कथा–कीर्तन सुनकर उद्धार नहीं हुआ। सत्संग ही सब पापों को दूर करता है। सत्संग महापुरुषों का होना चाहिए। संसार तो स्वार्थी और मतलबी है। जब तक हमारा स्वार्थ सिद्ध होता है तभी तक प्यार करते हैं। आपने सुना होगा कि देवगति से अगर छः महीने हो जा बिमार।

कितना ही प्यारा बेटा हो, चाहे बहू और धी–जंवाई भी क्यों न हो अगर वह छः महीने बिमार हो जाए तो क्या कहता है?

देवगति से छः महीने हो जा बिमार।
इसने ठाले के हम ने ठाले, हे सच्चे करतार।।

हे मालिक ! या तो इसे उठा ले या हमें उठा ले। हम तो

दुखी हो गए।

मतलब का संसार है। होश कर चालियो जी मतलब का संसार। यह सारे का सारा मतलब का ही संसार है। जब मतलब नहीं है तो कोई भी प्यारा नहीं लगता। मैंने तो इस शब्द पर सत्संग किया है। सुख सागर में आय के मत जाइए हंस पियासा। यह शरीर सुख सागर है अगर भैड़े कामों से बचा हुआ हो तो। अगर भैड़े काम करता है तो दुख का सागर भी है।

एक प्रेमी आज मेरे पास आया हुआ था। उसने कहा—अब मैं तो गाड़ी के नीचे कटकर मरूंगा। मैंने पूछा—क्यों? तो उसने अपने लड़के की तरफ हाथ करके कहा कि इस लड़के ने मुझे तबाह कर दिया। एक दिन तो जब लड़का पैदा हुआ था तो थाली बजी थी। बड़े सतिए लिखे थे और बड़े गीत गाए थे। आज वह लड़का बड़ा हो गया और स्वार्थ सिद्ध नहीं हुआ। वह कष्ट देने लग गया तो कहता है कि इस लड़के के कारण गाड़ी के नीचे कट कर मरूंगा। वही बाप और मां हैं। अब बताओ, संसार मतलब का है या नहीं। क्यों? ये कर्जा उगाहते हैं। यह औलाद का दोष नहीं है यह मां—बाप का ही दोष है। औलाद तो मां—बाप के हाथ में होती है। अगर यह बात पूछना चाहते हो तो सवेरे मुझसे प्रश्न कर लेना। अपनी औलाद को दोष मत दो। अपने आपको दोष दिया करो। तुम देखते हो कि आज राजदरबार में कितने विद्वान और विज्ञानी इकट्ठे होते हैं। कोई बाजरे के बीज को सुधारता है, कोई ज्वार का और कोई वक्षों के, पौधों को सुधारता है। सभी सुधार कर रहे हैं। कोई पशुओं की नस्ल सुधारता है। पर इन विज्ञानियों ने आज तक तो तजुर्बा नहीं किया कि अपनी औलाद को भी सुधारो। अपनी औलाद को तो बर्बाद करते जा रहे हैं। और तो सारी चीजों को सुधार रहे हैं। दवाई छिड़कते हैं। पर अपनी औलाद पर तो दवाई नहीं छिड़कते। उसे बर्बाद करते जा रहे हैं। ये विज्ञानी इसी बात को

नहीं उठाते हैं। क्यों उठाएं? इन्होंने संतों का तो शरणा ही छोड़ दिया है। ये अपने विज्ञान में फंस कर राम को भी भूल गए हैं। इसी कारण इनकी औलाद भी इनकी दुश्मन बन गई है। अगर ये संतों की लाइन पर चलते तो इनको भी श्रवण जैसे बेटे हुऐ होते।

कल मेरे पास मेरा एक सत्संगी भाई आया। रामस्वरूप नाम है। मैंने पूछा कि लड़के का क्या ढ़ंग है? उसने बताया कि बस पूछो मत। वह तो श्रवण बन गया है। वह लड़का बहुत ज्यादा शराब पीया करता था। नाम भी ले गया। कुछ दिन छोड़ी, फिर पीने लगा। उसी ने यह कहा कि बस श्रवण बन गया। उसी ने एक दिन ये कहा था कि बस कहीं न कहीं मरूंगा। लड़के ने तंग कर दिये। कूंए में पड़ना होगा। अब वह लड़का पवित्र हो गया तो वह कहता है कि लड़का तो श्रवण हो गया है। जिन्दा हो गए। उससे भी मैंने एक दिन कहा था कि यह लड़के का दोष नहीं है। यह तो तुम्हारा दोष है। जितना उसका कोटा पूरा हो जाएगा तब सब ठीक हो जाएगा। घबरा मत।

कई प्रेमी आते हैं। मैं कहता हूं कि लड़के में दोष नहीं है। लड़के तो बड़े अच्छे होते हैं। इनका कोटा पूरा होते ही समझ जाएंगे। यह तो मां—बाप का कसूर होता है। अपनी औलाद को कभी दोष मत दो। सारे और कुछ सुधारने में लगे हैं। पर ऐसा है कोई जो इंसान को सुधारने में लगा हो और अपनी औलाद को सुधारने में लगा हो? नहीं। सब ही बिगाड़ते जा रहे हैं और बिगड़ते जा रहे हैं। तबाही आई हुई है। महात्मा अगर बताने के लिए आते हैं तो मां—बाप भी कहते हैं कि उसके सत्संग में मत जाना। कूंए में छलांग लगा देना। भाई सत्संग में चला गया तो काम ही बिगड़ जाएगा। वह भी मां—बाप ही हैं जो अपने बच्चों को पकड़कर लाते हैं कि सत्संग में चल। सत्संग तो एक वैतरणी नदी है। सत्संग में बड़े—बड़े पापी तिर गए। मैं तो अपनी बातें बताता हूं। मेरा बाप तो

मुझे सत्संग में जाने पर तो पीटता था। पर मैं अपने बाप को कहा करता था–पिता जी! मैं आपकी मेहरबानी से ही सत्संगी बना हूं। आप नहीं पीटते तो मैं सत्संगी नहीं बनता। सो आपकी मेहबानी है। मां–बाप की मेहरबानी से लोग प्रह्लाद के गुण गाते हैं। प्रह्लाद ने भक्ति नहीं की थी। भक्ति तो उसकी हिरणाकुश और होलिका ने करवाई थी। लोग ध्रुव के गीत गाते हैं। ध्रुव ने भक्ति नहीं की वह तो उसके बाप और मौसी ने करवाई थी। सो दुख देने वाले ही भक्ति करवाते हैं। मीरां ने भी भक्ति नहीं की उसकी भक्ति भी राणा जी ने करवाई थी। उसका परमात्मा पर विश्वास बढ़ता चला गया। इसलिये अपना विश्वास मजबूत रखा करो। जो दुख देता है वह तुम्हारी भक्ति को मजबूत करता है। उस जगह अपनी चाल को मत छोड़ो। जो चाल छोड़ देता है वह गिर जाता है। सो सतगुरु की शरण में जाने से कोटि जन्मों के पाप कट जाते हैं और जीवन सफल हो जाता है। किसी को कोई शंका हो तो बात कर लेना। मैं पढ़ा लिखा तो नहीं हूं। फिर भी अगर मुझे कुछ बात की समझ होगी तो कोशिश करूंगा। मैंने तो भजन–सुमरन ही किया है। मैं कुछ और नहीं जानता हूं। अब भी भजन सुमरन से कुछ समय निकाल कर आपको खुश करने के लिए आ जाता हूं।

एक बार गुरु नानक साहब के पास एक लड़की आई। उसने कहा–महाराज! मेरा लड़का गुड खाता है। आप इसका गुड़ खाना छुटवा दो इसे दुख होता है। नानक जी ने कहा–बेटी दस पन्द्रह दिन में आना। वह १५ दिन बाद में आई। उसने कहा–महाराज ! मैं तो आ गई। इस लड़के का गुड़ छुटवाओ। उन्होंने कहा-छुटवा दूंगा, बैठ जा। नानक साहब ने लड़के से कहा भाई गुड़ नहीं खाना चाहिए। गुड़ बड़ा खराब होता है। इसमें नुकसान है। उस लड़की ने कहा–महाराज! यह बात तो आप उस दिन भी कह सकते थे। नानक साहब ने कहा–बेटी। उस दिन तो मैं खुद गुड़ खाता था।

आज मुझे १५ दिन हो चुके। गुड़ छोड़ दिया है। इसीलिए ये बातें कहता हूं और ये छोड़ भी देगा। ऐ सत्संगियों! मैं सीधा सादा यह बोलता हूं लेकिन ठीक बोलता हूं। यह मेरे सतगुरु की ही दया मेहर थी। अगर मुझे सतगुरु नहीं मिलता तो मैं भी चोरों की तरह से बोलता। मैं भी ठगने की बातें करता और तुम्हें धोखा देकर चला जाता। मेरे सतगुरु शहनशाहों के शहन शाह थे और पूर्ण पुरुष थे। उन्होंने मुझे धोखे की बातें नहीं सिखाई। उन्होंने यही कहा कि अपना जीवन सुधारना है। आग लगो इज्जत को। आग लगो मान बड़ाई को। संसार से अपनी आत्मा को मैली करके नहीं जाना। उनका ये उपदेश था मेरे लिए। अगर आप समझो तो आपको वही बातें बताता हूं। दूसरी पालीसी की बातें मैं जानता भी नहीं हूं और न मुझे जरूरत ही है। क्योंकि दो रोटी तो सतगुरु की दया से कमा कर खाता हूं। फिर क्या करना है? दूसरे से थूक गिरवा कर दूसरे को मसलना क्या यह बड़ी बात है? मैं दूसरों से अपने हाथ पर थुकवा भी बहुत लेता हूं और दूसरों को हाथ मसल देते हूं। ये कोई भक्ति नहीं है। यह तो इतना है कि इंसान बच जाता है। कोयले की दलाली में तो काला मुंह होता है पर भागी वही होता है जो कोयले की दलाली करके भी अपने कपड़े साफ रख लेता है। वही बड़ा भागी होता है। वह कैसे? वह पाप से बचा रहता है। सो तुम सत्संगी हो। बचकर रहना चाहिए। खोटे कर्मों से बच कर अपना जीवन सफल कर लो। मैं तो यह नहीं कहता कि धन न कमाओ। मैं यह भी नहीं कहता कि औलाद पैदा न करो। मैं नहीं कहता कि तुम अपना काम धंधा छोड़ दो। नहीं! सारे ही साधु बन गए तो काम कौन करेगा? साधु बनते भी नहीं हैं। अगर साधु बन भी जाएं तो जीवन ही सफल हो जाए। साधु नाम तो साध ाना का है। घर बैठे भी बन सकते हो। कपड़े रंगने की भी जरूरत नहीं है। कपड़े काले, पीले कैसे ही रख लो। क्या मेरी तरह दाढ़ी

बढ़ाने से ही भक्ति हो सकती है? नहीं। रूंड, मुंड बनकर भी भक्ति कर सकता है। कान पड़वाने से ही भक्ति होती है क्या? फिर तो ये माई–बाई सभी कान पड़वाए हुए हैं। भक्ति तो मन पर काबू करने से होती है। सो मन को काबू करो। ये मन को काबू करने की बातें हैं। अपने विचार पवित्र रखो।

।। राधास्वामी।।

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

सितम्बर/अक्तूबर मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1	**इस्माइलपुर**	**18 अक्तूबर-24 सितम्बर**
2	**कोसली**	**25 अक्तूबर-31 अक्तूबर**
3	**लालपुर**	**01 नवम्बर-07 नवम्बर**
4	**चौबारा**	**08 नवम्बर-14 नवम्बर**
5	**थिरपाली**	**15 नवम्बर -21 नवम्बर**

महर्षि शिवव्रत लाल जी

कहानी है किसी साधु की कुटी में एक चूहिया रहती थी। वह बिल्ली से बहुत डरती थी। साधु से प्रार्थना की, कि बाबा! मुझे बिल्ली बना दो। साधु ने बिल्ली बना दिया। इस पर कुत्ता झपटा। वह भागकर साधु के पास आई। बाबा! मुझे कुत्ता बना दो। साधु ने उसे कुत्ता बना दिया। कुत्ते पर चीते ने हमला कर किया वह डर के मोर कुटी में दौड़ गया। बाबा! मुझे चीता बना दो। वह चीता हो गया। किसी राजा के हाथी ने इस चीते पर हमला किया। वह सामना न कर सका। फिर भागा हुआ आया। बाबा! मुझे हाथी बना दो। चूहिया हाथी भी बन गई। महावत इसकी गर्दन पर चढ़ बैठा और अंकुश से मारने लगा। हाथी ने अवसर पाकर फिर साधु का सहारा लिया। बाबा! मुझे महावत बना दो। महावत भी बन गया। हाथी पर सवार हुआ। एक दिन हौदे पर राजा की रानी बैठी हुई थी। वह महावत के किसी कसूर पर क्रोधित हो गई। आज्ञा दी कि इसको फांसी दे दो। महावत दौड़ा हुआ आया। बाबा! मैं महावत बनने से तंग आ गया। मुझे रानी बना दो। साधु ने रानी भी बना दिया। अब चुहिया रानी हो गई। एक दिन राजा इस पर बिगड़ा। आज्ञा दी यह रानी बड़ी असभ्य है। इसे जमीन में गाड़ कर पत्थर मारो ताकि मर जाये। वह रानी दौड़ी हुई आई। बाबा! मैं सब कुछ बनी लेकिन चैन किसी दशा में नहीं मिला। साधु ने कहा–तेरे अन्दर चुहिया का संस्कार है। अच्छा हो चुहिया होकर मेरी झोंपड़ी में रह। अन्त में वह चुहिया की चुहिया बन गई।

इस परिवर्तन के ढंग का नाम आवागमन और जन्म–मरण है। जो बनता है, बिगड़ता है। बनना बिगड़ना इच्छा के सिलसिले में होता है। इसलिये क्या यह अच्छा नहीं है कि हम इस इच्छा के फंदे से छुटकारा पा जाए जिसमें झगड़े की जड़ है। संतमत असल

में इसी इच्छा की जड़ में दबे हुए कुल्हाड़ा नहीं समझ सकते। इसलिए इसको धीरे-2 युक्ति और उपाय से मंजिलों से ले जाते हुए वह इस दशा में लिये जा रहा है जिसे हमने नि:इच्छा का नाम दिया है।

हजारों ख्वाईसे ऐसी की हर ख्वाइस पै दम निकले।
बहुत निकले मेरे अरमां, व लेकिन फिर भी कम निकले।।

लघु कथा

प्रभु इच्छा

एक राजा और उसका वजीर जंगल में जा रहे थे। रास्ते में राजा के हाथ में चोट लग गई। वजीर ने मरहमपट्टी तो कर दी परन्तु यह कह दिया कि जो भी भगवान करता है अच्छा ही करता है। राजा को बड़ा गुस्सा आया और उसने वजीर को पकड़कर एक कुएं में फेंक दिया। वह बेचारा कुएं में पड़ा रहा और राजा आगे चला गया।

थोड़ी दूरी पर उसको आदमखोरों ने आ घेरा और कहने लगे कि देवी पर इसकी बली चढ़ाएंगे। जब अच्छी तरह देखा तो पता लगा कि इसकी एक उंगली टूटी हुई है। सब कहने लगे कि यह तो खंडित आदमी है। उसे छोड़ दिया।

राजा रास्ते में सोचने लगा कि वजीर ने ठीक ही कहा था। यदि यह चोट न लगी होती तो वह मारा जाता। वह सीधा उसी कुएं पर वापिस आया और वजीर को बाहर निकाल कर क्षमा मांगने लगा। वजीर ने नम्रतापूर्वक कहा जो कुछ भगवान करता है अच्छा ही करता है। आपकी उंगली टूटी तो आपकी जान बच गई। आपको गुस्सा आया मुझे कुए में फेंक दिया तो मेरी जान बच गई। मैं आपके साथ होता तो आप तो बच जाते परन्तु वह मेरी बली चढ़ा देते।

राम झरोके बैठ कर सबका मुजरा लेत।
जैसी जाकी चाकरी वैसा वाको देत।।

सेवादारों के लिए विशेष सूचना

सभी सेवादारों को ''राधास्वामी संत संदेश'' पत्रिका के माध्यम से सूचित किया जाता है कि दिनोद आश्रम का वार्षिक सत्संग (जन्म दिन बड़े महाराज जी) **दिनांक** 13-10-2004 को होना है। अत: सभी सेवा करने के इच्छुक सत्संगी व सेवादार दिनांक 11-10-2004 को प्रात: 8:00 बजे दिनोद आश्रम में निश्चित समय पर अवश्य पहुंच जायें।

इस बार सेवादारों को सत्संग से दो दिन पूर्व इसलिए बुलाया जा रहा है क्योंकि दिनोद आश्रम में निर्माण कार्य चल रहा है। अत: सत्संग की सुविधाजनक व्यवस्था करने के लिए सभी सेवादार समय पर पहुंच जाएं।

''राधास्वामी संत संदेश'' के सदस्यों से भी प्रार्थना की जाती है कि यह सूचना अपने अधिकतम सत्संगियों व विशेष रूप से सेवादारों तक जिस प्रकार भी संभव हो विशेष रुचि लेकर शीघ्रातिशीघ्र पहुंचाने का कष्ट करें। इसे अति आवश्यक समझें।

।। राधास्वामी ।।

सचिव,
राधास्वामी सत्संग दिनोद, भिवानी

अनमोल वचन

मनुष्य में कितने ही शुभ गुण क्यों न हो, यदि लोभी है तो संसार उसे घृणा करता है। यदि वह लालची है तो कौड़ी काम का भी नहीं। *– संत कबीर साहिब*

गुरुमुखों के पास बैठने का इतना फायदा है उनके पास जाकर उनसे राह लेकर एक-एक कदम भी चलोगे तो भी पहुंच जाएंगे। वह आपको मालिक से मिला देगा।

– बाब सावन सिंह जी महाराज

मनमुख बहुत कुटुम्ब और मित्र चाहता है और धनवान और हुकुमत वालों से ज्यादा मुहब्बत करता है अपनी जाति-पाति का अहंकार रखता है और सतगुरु की प्रसन्नता का ख्याल कम रखता है। *– महर्षि शिवव्रतलाल जी*

ज्ञान-सार

किसी का कल्याण होता है तो उसके मूल में किसी सन्त की अथवा परमात्मा की कृपा होती है।

कामना उत्पन्न होते ही मनुष्य अपने कर्त्तव्य से, अपने स्वरूप से और अपने इष्ट (भगवान) से विमुख हो जाता है और नाशवान संसार के सम्मुख हो जाता है।

मेरी मन की हो जाये, इसी को कामना कहते हैं। यह कामना ही दुख का कारण है। इसका त्याग किये बिना कोई सुखी नहीं हो सकता।

संसार की कामना से पशुता का और भगवान की कामना से मनुष्यता का आरम्भ होता है।

भाग-3

हिसार 11-7-2004

जब तक कोई ध्येय सामने नहीं होता है तो ध्याता कोई ध्यान कर ही नहीं सकता है। लोगों में सच्चे और जीवित ध्येय यानि सन्त सतगुरु की पूजा छोड़ कर जड़ ध्येय यानि मूर्ति और नदी आदि की पूजा की परम्परा पड़ गई, जिससे लोग भयंकर अन्धविश्वास और रूढ़िवाद में फंस गए हैं और आज इनमें से समाज को निकालना असम्भव हो गया है। लोग सच्चाई की तरफ चलते कठिनाई महसूस करते हैं। इसके विपरीत वे पाखण्डों में बहुत जल्दी फंस जाते हैं और उन पर उनको विश्वास आ जाता है। आज के समाज की बहुत सी सामाजिक, धार्मिक परम्पराएँ अन्धविश्वास, रूढ़िवाद और पाखण्डों को ही बढ़ावा देती हैं। सन्तों का जहाँ पहनावा बहुत सीधा सादा होता है उनके विचार बहुत सरल और स्पष्ट होते हैं। सन्त सतगुरु जहाँ समाज में पनपते अन्धविश्वास, रूढ़िवाद और पाखण्डों का विरोध करते हैं, वहीं उन्हें उनकी भावी घटनाओं को दर्शाने वाले शुभ-अशुभ संकेतों यानि लोगों में प्रचलित सामाजिक सौण-कसौणों को उन्हें भी मानना पड़ता है और उनको स्वयं को उन पर चलना ही पड़ता है।

समाज में प्रचलित इस प्रकार के सौण-कसौणों को पूर्ण

समाज में मान्यता प्राप्त होती है और वे इस सदासत्य यानि **Universal Truth** के सिद्धान्त पर आधारित होते हैं कि

"Voice of the People is voice of God."

एक बार दादू जी महाराज अपने किसी काम पर जाने के लिए उठे तो उनके पास बैठे हुए कुछ लोगों ने उन्हें थोड़ा समय और रुक जाने के लिए कहा, क्योंकि उनके उठते ही किसी को छींक आ गई थी। तब दादू जी महाराज ने उन लोगों को समझाया कि इस प्रकार की बातें तो व्यर्थ होती हैं क्योंकि सन्त तो यह कहते हैं कि

दादू दुनिया बावली फिर–2 माँगे सौण।
लिखण वाला लिख गया, तो मेटण वाला कौण।।

ऐसा कहकर दादू साहब बिना रुके वहाँ से चल पड़े। वे थोड़ी ही दूर गए थे कि उनको रास्ते में पालियो अथवा चरवाहों की एक टोली मिल गई। चरवाहों ने दूर से ही दादू जी को आते हुए देख लिया। उन्होंने आपस में बातें की। वे बोले कि कहते हैं कि दादू जी महाराज भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों ही कालों की बातों को जानते हैं। आज हम देखेंगे कि क्या यह बात सच है? अत: दादू जी के पास आते ही सभी पालियों ने उनको घेर लिया और उनको रोककर कहा–आज हम आपको पीटेंगे अन्यथा आप यह बताओ हम आपको लट्ठ आपके पैरों पर मारेंगे या आपके हाथों पर मारेंगे? दादू जी ने पालियों से पूछा–क्या मैंने आपका कोई कसूर किया है? चरवाहों ने कहा–यह बात तो आप ही जानते हैं क्योंकि आप तो त्रिकालदर्शी है। अब

दादू जी यहद यह कहते कि तुम मेरी टांगों पर मारोगे तो पाली उनकी कमर पर मारते और यदि दादू जी कहते कि तुम मेरी पीठ पर मारोगे तो वे उनके हाथों पर अपने लट्ठ मारते। इस प्रकार दादू जी की उन्होंने अच्छी पिटाई की और आखिर में उनके सिर पर से उनकी टोपी उतार ली और उनको कहा–अब जाओ, तुम्हें तो किसी बात का भी पता नहीं है। तुम लोगों को बहकाते हो। इस पर दादू जी महाराज ने कहा–

दादू दुनिया सत्य है, सत्य ही माने सौण।
जो मैं दुनिया की मानता, तो टोपा खौसे कौण।।

दुनिया बडी है। सन्तों को भी दुनिया रखनी पड़ती है। इसी कारण से सन्त कहते हैं कि सत्संगियों को अपनी सामाजिक और धार्मिक सभी पारिवारिक परम्पराओं को पूरा करना चाहिए क्योंकि उनमें परिवार के सौण (शुभ संकेत) छुपे होते हैं परन्तु इसके साथ ही उनको सब अन्धविश्वास और पाखण्डों से दूर भी रहना चाहिए।

यह घटना उस समय की है जब हजूर महाराज कंवर जी ने 1997 में हुजूर ताराचन्द जी महाराज के चोला छोड़ने के पश्चात् गद्दी सम्भाली थी। हुजूर महाराज जी को गद्दी सम्भाले कुछ ही माह बीते थे। मैंने बड़े महाराज जी की एक कैसेट में सुना था तथा पुस्तकों में पढ़ा था कि जिसकी श्रद्धा और विश्वास होगा उसके सब काम सतगुरु पूर्ण करते हैं। मेरे छोटे लड़के जयरत्न की, जिसकी आयु **उस समय** 7 वर्ष थी, किसी घटना के कारण जबान (आवाज) तुतला गई थी अर्थात वह स्पष्ट नहीं बोल सकता था। मैंने कई डाक्टरों को दिखलाया किन्तु कोई फायदा नहीं हुआ। आखिर मैं हुजूर महाराज कंवर जी के आशीर्वाद का विचार करके दिनोद आश्रम में आया। जब मैंने अपने परिवार सहित आश्रम में प्रवेश किया उस समय बच्चे की आवाज बिल्कुल तुतली थी। वहाँ आश्रम में हाल में हम सब जाकर बैठ गये। थोड़ी देरी के पश्चात ही हुजूर महाराज जी की हमारे परिवार पर बड़ी अनुकम्पा हुई। आश्रम की देखभाल करते हुए वे इधर से निकले। बिना कुछ हमारे कहे मेरे बच्चे के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दे दिया। प्रेम पूर्वक हमारे हाल–चाल पूछे, आश्रम से निकलते ही बच्चे की बोली में जादुई चमत्कार हुआ। हम सब आश्चर्य चकित रह गये कि बच्चे की आवाज बिल्कुल ठीक हो चुकी थी। हालांकि जिस दिन से गुरु महाराज ताराचन्द जी ने मुझे नामदान दिया था उसी दिन से मुझे पूर्ण यकीन हो गया था किन्तु नये महाराज कंवर जी के गद्दी सम्भालते ही ऐसा चमत्कार हुआ जिसने मुझे पूर्ण समर्पित होने के लिए प्रेरित किया।

वर्ष 2003 में मार्च महीनें में अपनी लड़की पुष्पा जिसको बच्चा होने वाला था। मैं उसको जापे के वास्ते अपने शहर संगरिया जिला हनुमानगढ़ (राजस्थान) में लाने हेतु, उसकी ससुराल कितलाना चला गया। मेरे मन में बड़े संशय उठ रहे थे कि कहीं कोई परेशानी नहीं हो जाये, क्योंकि बच्ची के कलेजे में दर्द रहता था तथा उसका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता था। उसके पेट में बच्चा भी उल्टा था। बहुत सारी समस्याएं एक साथ नजर आ रही थीं।

उसके ससुराल में ही रात के तीन–साढ़े तीन बजे के करीब स्वप्न में मुझे हुजूर महाराज कंवर सिंह जी ने दर्शन दिए। मैंने उनको झुककर नमन किया तथा गुरुजी ने मुझे आदेश दिया कि जाओ मैंने इसका कलेजा ठीक कर दिया है। किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं होगी। मैंने उसके बाद ध्यान में बैठकर स्मरण किया तथा लड़की को लेकर संगरिया चला गया। राधास्वामी के नाम पर, एक डाक्टर से दवा ली जिससे लड़की का बच्चा पेट में सही स्थिति में आ गया। डिलिवरी के समय जरा भी परेशानी नहीं हुई लड़का हुआ तथा सब ठीक हो गया।

प्रेषक
हनुमान प्रसाद लखारा प्राध्यापक (लेखा शास्त्र)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पो. संगरिया,
जिला हनुमानगढ़ (राज.) 335063

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।